शरीर, आत्मा और आत्मा

जब आप मर जाते हैं तो वे कहाँ जाते हैं?

Randolph Dunn

Body, Soul and Spirit

शरीर, आत्मा और आत्मा
जब आप मर जाते हैं तो वे कहाँ जाते हैं?

परिचय

अपनी सृष्टि के आरंभ में, परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा पृथ्वी और उसके सभी तत्वों: वनस्पतियों, पशुओं, पक्षियों, मछलियों और अन्य सभी प्राणियों को अस्तित्व में आने के लिए बोला। इन तत्वों से उसने मनुष्य का निर्माण किया और मनुष्य में जीवन की सांस फूंकी, जिससे मनुष्य एक शाश्वत आध्यात्मिक आत्मा के साथ एक भौतिक प्राणी बन गया। परमेश्वर ने मनुष्य को न केवल अपनी अमरता की छवि में बनाया, बल्कि अपनी दया, शांति, धार्मिकता और विश्वास, प्रेम, अपने स्वभाव और सार की समानता में भी बनाया। भगवान अपनी सृष्टि के अंतिम कार्य से बहुत संतुष्ट थे।

फिर, मनुष्य की अनाज्ञाकारिता के कार्य के कारण उसकी सृष्टि पर मृत्यु आ गई। मनुष्य (अनंत काल के लिए सृजित) के लिए परमेश्वर अपने निर्देश में स्पष्ट था कि वर्जित वृक्ष तक न पहुँचे और न खाए.... शारीरिक और अनन्त मृत्यु निश्चित रूप से घटित होगी, फिर भी उसने अवज्ञा की और यह किया!

भौतिक दुनिया में हमारे लिए यह समझना आसान है कि, मृत्यु के समय, शरीर क्षय होना शुरू हो जाता है, वापस पृथ्वी के तत्वों में बदल जाता है। ये तत्व अपने रूप को ठोस, तरल या गैस में बदल सकते हैं - जैसे तरल पानी जो ठंडा होने पर बर्फ बन जाता है और गर्म होने पर भाप बन जाता है।

क्या समझना आसान नहीं है - जानना तो दूर की बात है - जब मनुष्य मरता है तो उसकी आत्मा और आत्मा कहाँ जाती है?

पवित्र शास्त्र हमें सिखाता है कि "समय के अंत" में, मनुष्य के अलावा परमेश्वर की भौतिक रचना तीव्र, तीव्र गर्मी से पिघल जाएगी। यह यह भी बताता है कि मनुष्य के लिए एक निवास स्थान होगा - या तो एक: स्वर्ग में अनन्त जीवन या नरक में अनन्त मृत्यु

आप बाद के जीवन में कहाँ रहना चाहते हैं?

अध्याय 1

शरीर, आत्मा और आत्मा का क्या होता है?

"शुरुआत में, भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया। पृथ्वी निराकार और शून्य थी।"(उत्पत्ति 1:2) "फिर परमेश्वर ने कहा, 'आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए, और सूखी भूमि दिखाई दे।' और वैसा ही हो गया। परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा। (उत्पत्ति 1:9-10) "और परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात घरेलू पशु, और रेंगने वाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया।" (उत्पत्ति 1:24)

तब परमेश्वर ने मनुष्य को प्रेम, धार्मिकता, शांति और दया की समानता में एक भौतिक और एक शाश्वत प्राणी बनाया। फिर उसने आदम और हव्वा से कहा कि वे उस स्थान की सुधि लें, जहां वह रखा गया है, और फले-फूले और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाएं। परन्तु उन्होंने पाप किया जब वे अपनी इच्छाओं के आगे झुक गए और वृक्ष का फल खाकर अवज्ञा की। इस अवज्ञा के

परिणामस्वरूप शारीरिक और अनन्त मृत्यु हुई। यह सभी मनुष्यों पर लागू होता है क्योंकि "सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोम 3:23)

परमेश्वर की इच्छा है कि सभी लोग अपने पापी जीवन के तरीके से बदलें, मसीह के लहू से धोए और शुद्ध हों, पापों की क्षमा प्राप्त करें, ताकि वह परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर सके। इसे पूरा करने के लिए, एक स्वीकार्य पापबलि चढ़ानी थी। नाज़रेथ के यीशु, मानव रूप में ईश्वर, जिन्होंने अपने पापरहित शरीर को एकमात्र और पूर्ण पाप-बलि के बलिदान के रूप में किसी के लिए भी पेश किया, जो उनकी मृत्यु में गाड़े जाने के द्वारा आज्ञाकारिता के माध्यम से मसीह में अपना विश्वास और भरोसा रखता है, एक नया आध्यात्मिक अस्तित्व उठाया, क्राइस्ट चर्च, और उपहार के रूप में पवित्र आत्मा दिया। फिर जो मसीह में हैं उन्हें परमेश्वर की समानता में बढ़ना और परिपक्व होना है - प्रेम, विश्वास, शांति, दया, सत्य - मसीह के वचन में बने रहने और उसकी इच्छा के अनुसार जीने के द्वारा।

अगरजो मसीह में विश्वासयोग्य बने रहते हैं, उनकी नियति परमेश्वर, मसीह, पवित्र आत्मा और अन्य लोगों के साथ अनन्त जीवन है जो मसीह के लहू द्वारा धर्मी बनाए गए हैं। हालाँकि, विद्रोही, विश्वासघाती और अपश्चातापी की नियति शैतान के साथ अनन्त मृत्यु है।

अय्यूब जैसे लोग अक्सर प्रश्न पूछते हैं कि शारीरिक मृत्यु के बाद क्या होता है; "यदि मनुष्य मर जाए, तो क्या वह फिर जीवित होगा?" (अय्यूब 14:14)

"यदि मनुष्य मर जाए, तो क्या वह फिर जीवित होगा?" को सम्बोधित करने से पूर्व इस अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों की कुछ परिभाषाएँ तथा प्रारम्भ से ही मनुष्य के अस्तित्व की समीक्षा क्रमानुसार है।

शरीर- दृश्यमान और भौतिक मनुष्य - मनुष्य का मांस और रक्त का हिस्सा।

"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया, और आदम जीवित प्राणी बन गया।"(उत्पत्ति 2:7-8)

"तेरे हाथों ने मुझे बनाया और बनाया, और अब तू ने मुझे पूरी तरह से नष्ट कर दिया है। स्मरण रख कि तू ने मुझे मिट्टी के समान बनाया है; और क्या तू मुझे मिट्टी में मिला देगा?"(अय्यूब 10:8-9)

"क्योंकि जो मनुष्य की सन्तान के साथ होता है वह पशुओं के साथ भी होता है; उन पर एक बात आ पड़ती है: जैसे एक मरता है वैसे ही दूसरा भी मरता है। निश्चय ही उन सबकी एक ही श्वास है; मनुष्य को पशुओं से कुछ लाभ नहीं, क्योंकि सब कुछ व्यर्थ है। सब एक स्थान को जाते हैं: सब मिट्टी से बने हैं, और सब मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। मनुष्य के पुत्रों की आत्मा को कौन जानता है, जो ऊपर की ओर जाती है...?"(सभोपदेशक 3:19-21)

मौत- भौतिक शरीर के हृदय, फेफड़े, मस्तिष्क आदि के कामकाज की समाप्ति।

बाढ़ के वृत्तांत में, यह कहता है "जितनी भूमि पर जीवन का श्वास था, सब के सब मर गए।" (उत्पत्ति 7:22)

"आत्मा के बिना शरीर मर चुका है।"(याकूब 2:26)

"और जैसे मनुष्य के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है, वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठाने के लिये एक बार बलिदान होकर, पाप से निपटने के लिये नहीं, परन्तु जो हैं उनका उद्धार करने के लिये दूसरी बार प्रकट होगा। उसका बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।"(इब्रानियों 9:27-38)

टिप्पणी: मनुष्य का शरीर गंदगी का निर्जीव रूप था जब तक कि परमेश्वर ने शरीर में प्राण फूंक कर मनुष्य को प्राण और आत्मा नहीं दी।

कब्र -कब्र कहीं भी है जहां मृत भौतिक शरीर को छोड़ दिया जाता है या डाल दिया जाता है - समुद्र, जंगल, एक मकबरा या कुछ भी जो आखिरी निशान रहता है।

पाताल -अधोलोक हिब्रू शब्द शिओल और ग्रीक शब्द ऐडोस या हडौ से बना है जिसका अर्थ है भौतिक मृतकों की आत्माओं का निवास - शारीरिक रूप से मृत लोगों की शाश्वत आत्माओं की न देखी या अनदेखी दुनिया।

टिप्पणी: कुछ बाइबलों में गलती से एडोस और हडू का अनुवाद "नरक" के रूप में किया गया है। लेकिन नरक के लिए शब्द जिनी है - वह स्थान जो शैतान के लिए आरक्षित है। इस गलत अनुवाद ने बहुत भ्रम पैदा किया है।

"एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता था, और प्रति दिन सुख-विलास और धूमधाम से रहता था। और लाज़र नाम का एक कंगाल उसके फाटक के पास घावों से भरा हुआ पड़ा रहता था, और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर की जूठन से अपना पेट भरे। यहाँ तक कि कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। गरीब आदमी मर गया और स्वर्गदूतों द्वारा इब्राहीम के पास ले जाया गया। वह धनवान भी मरा, और गाड़ा गया, और अधोलोक में, पीड़ा में पड़े हुए, उस ने अपनी आंखें उठाईं, और दूर से इब्राहीम को और उसके पास लाजर को देखा।(लूका 16:19-23)

टिप्पणी: अधोलोक में धर्मी आत्माओं के लिए एक स्वर्ग है और उन लोगों के लिए एक पीड़ा का पक्ष है जो ईश्वर को मानने से इनकार करते हैं, विद्रोही, विश्वासघाती और दुष्ट।

नरक- इब्रानी शब्द गेनी का मूल अर्थ उस स्थान से था जहां मूर्तिपूजक यहूदियों ने अपने बच्चों को देवताओं मोलोच और बाल की पूजा के रूप में जिंदा जला दिया था। बेबीलोन के निर्वासन के बाद यह घाटीशहर का कचरा और आग बन गयालगातार जलता रहता था। यह स्वर्ग के विपरीत, दुष्टों के चिरस्थायी स्थान, नरक को इंगित करने के लिए आया था। [ईस्टन की बाइबिल डिक्शनरी, बाइबिलसॉफ्ट द्वारा पीसी स्टडी बाइबिल]

आत्मा- ग्रीक शब्द psuche का अर्थ है मनुष्य का शाश्वत होना, उसकी अंतरात्मा की जागरूकता मनुष्य को तब दी गई जब परमेश्वर ने उसमें जीवन फूंका। इसे अक्सर दिल या उसके आंतरिक होने के रूप में जाना जाता है।

"आत्मा की आग को मत बुझाओ; भविष्यवाणियों को अवमानना के साथ व्यवहार न करें। सब कुछ परखें। अच्छाई को थामे रहो। हर प्रकार की बुराई से दूर रहो। ईश्वर स्वयं, शांति के ईश्वर, आपको हर तरह से पवित्र करें। संभवत: आपकसंपूर्ण आत्मा, आत्मा और शरीर हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक निर्दोष बने रहो। जो तुम्हें बुलाता है वह विश्वासयोग्य है और वह ऐसा करेगा।" (1 थिस्सलुनीकियों 5:19-24)

मत्ती ने यीशु को यह कहते हुए रिकॉर्ड किया है "उनसे मत डरो जो तुम्हारी देह को घात करना चाहते हैं; वे आपकी आत्मा को नहीं छू सकते। केवल परमेश्वर से डरो, जो तुम्हारी आत्मा और शरीर को नरक में नष्ट कर सकता है (गेनी नॉट हडू)। (मत्ती 10:28)

आत्मा -इब्रानी शब्द नेशमाह और यूनानी शब्द पनुमा मनुष्य की उस आत्मा का उल्लेख करते हैं जिसे परमेश्वर ने उसमें बनाया है जो मनुष्य की मृत्यु पर परमेश्वर के पास लौट आती है। "मिट्टी (शरीर) वापस उस मिट्टी में मिल जाती है जिससे वह निकली थी, और आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाती है जिसने उसे दिया।" (सभोपदेशक 12:7)

रोम के मसीहियों को पौलुस ने लिखा, "आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।" … "आत्मा हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करता है। हम नहीं जानते कि हमें किस के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, परन्तु आत्मा स्वयं हमारे लिए आहें भर कर विनती करता है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। और जो हमारे मनों का जांचता है वह आत्मा की मनसा को जानता है, क्योंकि आत्मा पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।" (रोमियों 8:16; 26-27)

टिप्पणी: "आत्मा" जब परमेश्वर के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो आमतौर पर इसका अनुवाद परमेश्वर की आत्मा, मसीह की आत्मा, पवित्र आत्मा या सिर्फ आत्मा के रूप में किया जाता है।

टिप्पणी: अरामी शब्द रुवाच का अनुवाद "आत्मा" के रूप में किया गया है, जो मनुष्य सहित जीवन को सांस लेने वाले जानवरों को संदर्भित करता है।

अध्याय 1

मसीह के प्रायश्चित बलिदान से पहले का समय

"अच्छे और बुरे के ज्ञान" के पेड़ से खाने से पहले, जिसे परमेश्वर ने उन्हें खाने से मना किया था, आदम और हव्वा परमेश्वर के स्वभाव, समानता में बनाए गए धर्मी थे। लेकिन उन्होंने दर्द, दुःख और मौत लाते हुए, उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हुए विद्रोह कर दिया। ऐसा करने में उन्होंने शैतान का स्वभाव ग्रहण किया, वह विद्रोही स्वर्गदूत जिसकी नियति अनन्त मृत्यु थी।

उस समय पुरुष और स्त्री एक ही थे; यानी पति-पत्नी और बच्चे पैदा हुए। अन्य सभी जानवरों के विपरीत, नवजात बच्चे पोषण और प्रशिक्षण की आवश्यकता में पूरी तरह से असहाय होते हैं। "लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिस में उसको चलना चाहिये, और वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा।" (नीतिवचन 22:6) जैसे-जैसे बच्चे वयस्कता में परिपक्व होते हैं, प्रलोभनों को आवश्यक निर्णयों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वे भलाई करना चुन सकते हैं या प्रलोभन और पाप के आगे झुक सकते हैं। “इसलिये जैसा कि एक मनुष्य (आदम) के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई; और इस प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई।” (रोमियों 5:12) और "क्योंकि सब ने पाप किया है, और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों 3:23)

टिप्पणी: मनुष्य को पाप नहीं मृत्यु दी गई। आज्ञा मानना या पाप को चुनना और उसके परिणामों को भोगना मनुष्य की पसंद है।

उत्पत्ति में हम पढ़ते हैं कि मनुष्य की अत्यधिक दुष्टता के कारण परमेश्वर ने नूह, उसके परिवार और जहाज़ के जानवरों को छोड़कर हवा में सांस लेने वाले सभी जानवरों को नष्ट कर दिया। सृष्टि से लेकर मूसा तक की अवधि को पितृसत्तात्मक युग कहा जाता है।

मूसा का युग मूसा, तम्बू, याजक और पाप-बलियों, बैलों और बकरों के बलिदानों के साथ शुरू हुआ। उनके पाप-बलियों ने उन्हें उनके पापों के लिए क्षमा नहीं किया “परन्तु उन बलिदानों के द्वारा प्रति वर्ष उनका पाप स्मरण कराया जाता है, क्योंकि यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।” (इब्रानियों 10:4)। उन लोगों की आत्माएं जो पिता के पास वापस मसीह के स्वर्गारोहण से पहले मर गए थे, उन्हें हिरासत में लिया गया था, अधोलोक में बंदी बना लिया गया था। यहाँ धर्मियों को अधोलोक के स्वर्ग पक्ष में रखा गया था जब तक कि क्षमा के लिए आवश्यक पाप-बलि (मसीह) की पेशकश नहीं की गई थी। विद्रोही और दुष्ट अधोलोक के पीड़ा पक्ष में न्याय की प्रतीक्षा कर रहे थे। नासरत के यीशु के प्रायश्चित बलिदान से उनके पापों को दूर करने में बहुत वर्षों बाद की बात होगी। चूँकि यीशु मोज़ेक युग के दौरान जीवित थे, उनकी मृत्यु के बाद उनकी आत्मा स्वर्ग में चली गई। यीशु ने क्रूस पर चोर से कहा, "आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" (लूका 23:43)

मसीह से पहले मरने वाले सभी लोगों के शरीर, आत्मा और आत्माओं का निवास नीचे दर्शाया गया है।

ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी	दुष्ट और विद्रोही
आत्माभगवान के पास लौट आता है	**आत्मा**भगवान के पास लौट आता है
शरीरधूल में लौट जाता है	**शरीर**धूल में लौट जाता है
आत्माक्षमा की प्रतीक्षा में अधोलोक में स्वर्ग जाता है	**आत्मा**न्याय की प्रतीक्षा में अधोलोक में पीड़ा को जाता है

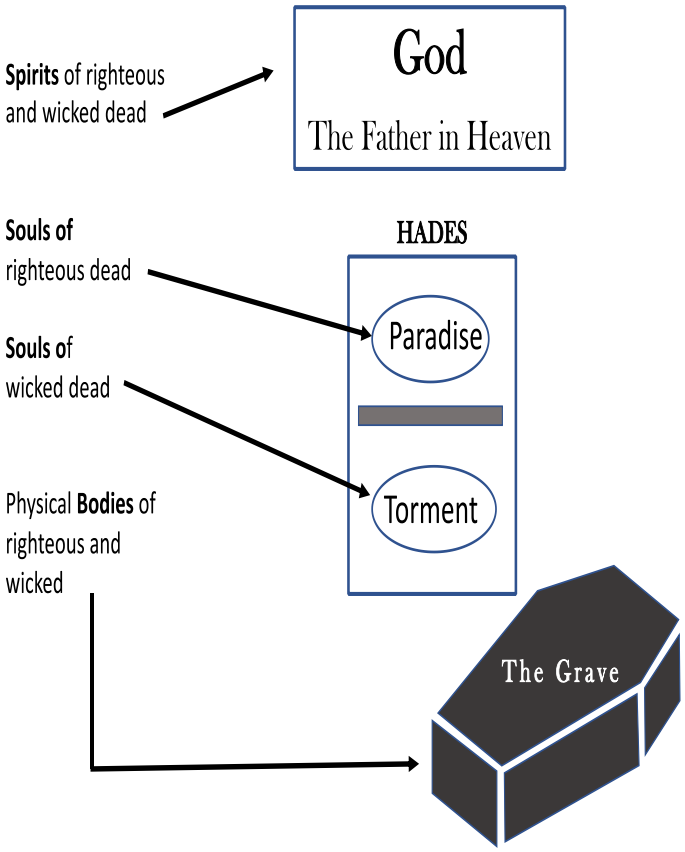

अध्याय दो

समय जबकि मसीह पृथ्वी पर था

"प्रभु का एक दूत उसे [यूसुफ] स्वप्न में दिखाई देकर कहता है, 'हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।'" (मत्ती 1:21-22)

टिप्पणी: यीशु "अपने लोगों" को बचाता है, सभी लोगों को नहीं।

प्रेरित यूहन्ना ने लिखा "दूसरे दिन उस ने (यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने) यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, 'देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।'" (यूहन्ना 1:29)

"इसी प्रकार लिखा है, कि मसीह को मृत्यु सहनी पड़ेगी(क्रूस पर चढ़ने के द्वारा) और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठे, और यरूशलेम से लेकर सभी जातियों (यहूदियों और अन्यजातियों) में उसके नाम से पश्चाताप और पापों की क्षमा का प्रचार किया जाए।" (लूका 24:46-47)

टिप्पणी: कुछ लोग दावा करते हैं कि मृत्यु के बाद सभी लोग स्वर्ग जाएंगे। यदि यह सच होता तो पापों के "पश्चाताप और क्षमा" की घोषणा करना आवश्यक नहीं है।

यीशु ने उससे कहा, “मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मुझे छोड़कर पिता के पास कोई नहीं आया।" (यूहन्ना 14:6-7)

"उसमें(मसीह) हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।” (इफिसियों 1:7)

अपने क्रूस पर चढ़ने से कुछ ही समय पहले यीशु ने अपने शिष्यों से कहा: “मैं पिता को छोड़कर जगत में आया हूं। अब मैं संसार छोड़कर पिता के पास जा रहा हूं।” (यूहन्ना 16:28)

> **टिप्पणी**: लेकिन पहले यीशु को उस उद्देश्य को पूरा करना होगा जिसके लिए वह स्वर्ग से उतरा था। परमेश्वर के मेमने को अपने आप को प्रायश्चित के बलिदान के रूप में परमेश्वर को अर्पित करना चाहिए क्योंकि उसने क्रूस पर रहते हुए मनुष्य के पापों को अपने शरीर पर उठा लिया।" (2 पतरस 2:24)

वह खुद को(मसीह) हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए वृक्ष पर चढ़ गया, ताकि हम पापों के लिये मरें और धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं; उसके घावों से तुम चंगे हुए हो। (1 पतरस 2:24)

यीशु ने चोर को उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने से कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" (लूका 23:43)

मरने के ठीक नौवें घंटे में यीशु ने महसूस किया कि भगवान ने उसे छोड़ दिया है, "मेरे भगवान, मेरे भगवान, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मैथ्यू 27:26)

तब मसीह की आत्मा ने "जाकर जेल में बंद आत्माओं को प्रचार किया (ग्रीक शब्द केरसो - जिसका अर्थ हेराल्ड, घोषणा करना, उपदेश देना) है, क्योंकि उन्होंने पहले आज्ञा का पालन नहीं किया था।" (1पतरस 3:19-20)

> **टिप्पणी:**उसकी उद्घोषणा की विषय-वस्तु के बारे में बाइबल मौन है। यीशु स्वर्ग में रहने वालों के लिए यह घोषणा कर सकता था कि आपके पाप अब क्षमा कर दिए गए हैं क्योंकि पूर्ण प्रायश्चित बलिदान किया जा चुका है।

कुछ नाटकीय रूप से बदल गया जब यीशु पिता के पास वापस आरोहित हुआ। उसने स्वर्ग और उसमें की सारी आत्मा को स्वर्ग में स्थानांतरित कर दिया। "जब वह ऊँचे पर चढ़ा, तब वह बन्धुओं के दल को ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।" (इफिसियों 4:8)

> **टिप्पणी**: फिरदौस में रखी हुई धर्मी आत्माओं की "बंदी" शुद्ध कर दी गई है, उन्हें क्षमा कर दिया गया है, और स्वर्ग में यीशु के साथ ऊपर उठा लिया गया है। न्याय के दिन की प्रतीक्षा में अधोलोक की पीड़ा में आत्माएं रह गईं।

अध्याय 3

मसीह के परमेश्वर के पास लौटने के बाद का समय

यीशु ने वादा किया:"मैं अपनी (मसीह की) कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)

> **टिप्पणी**: "मसीह का चर्च" एक इमारत, मंदिर या अभयारण्य नहीं है, बल्कि मसीह के लहू से क्षमा किए गए पापियों का शरीर है।

टिप्पणी: अधोलोक का द्वार या प्रवेश द्वार मृत्यु है, मनुष्य पर शैतान की पकड़ है। चूँकि मसीह की कलीसिया पर मृत्यु प्रबल नहीं होगी, तो उसके राज्य में जो लोग मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद मरते हैं, उन्हें अधोलोक में बंदी नहीं बनाया जाएगा।

टिप्पणी: दुष्ट अधोलोक में रहते हैं, एक जेल जो क्षमा न किए गए लोगों की आत्माओं को मसीह के पुनरागमन तक आश्रय देती है।

पॉल वांछित:

"जाने और मसीह के साथ रहने के लिए।"(फिलिप्पियों 1:23)

"इसलिए, हम हमेशा आश्वस्त रहते हैं और जानते हैं कि जब तक हम शरीर में घर पर हैं हम प्रभु से दूर हैं। हम विश्वास से जीते हैं, दृष्टि से नहीं। हम आश्वस्त हैं, मैं कहता हूं, और शरीर से दूर और प्रभु के साथ घर में रहना पसंद करेंगे।"(कुरिन्थियों 5:6-8)

"क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध सहने के लिये नहीं ठहराया है(हमेशा की पीड़ा) लेकिन हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार प्राप्त करने के लिए। वह हमारे लिए मरा ताकि, चाहे हम जागे (जीवित) हों या सोए (मृत), हम (जो मसीह में हैं) उसके साथ जी सकें। इसलिये एक दूसरे को प्रोत्साहन दो, और एक दूसरे की उन्नति करो, जैसा तुम कर भी रहे हो।" (1 थिस्सलुनीकियों 5:9-11)

टिप्पणी: यह सब पॉल की इच्छा से मेल खाता है। मरने के बाद उसकी आशा अधोलोक में जाने की नहीं थी जहाँ यीशु अब नहीं मिलेगा बल्कि स्वर्ग में जाकर मसीह के साथ रहना था।

"जब उस ने पांचवीं मुहर खोली, तो मैं ने वेदी के नीचे उन के प्राण देखे, जो परमेश्वर के वचन के कारण, और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी, वध किए गए थे।"(प्रकाशितवाक्य 6:9)

"एक और स्वर्गदूत, जिसके पास सोने का धूपदान था, आया और वेदी के पास खड़ा हो गया। उसे सब संतों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की वेदी पर, जो सिंहासन के सामने है, चढ़ाने के लिये बहुत धूप दी गई।"(प्रकाशितवाक्य 8:3)

टिप्पणी: प्रकाशितवाक्य 6:9 की पांचवीं मुहर में यूहन्ना ने शहीद हुए ईसाइयों की आत्माओं को देखा जो वेदी के नीचे थे और वह वेदी स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के सामने थी। तो, शहीद पाताल लोक में नहीं बल्कि स्वर्ग में थे।

"यीशु ने उससे कहा, 'मैं पुनरुत्थान और जीवन हूं। जो मुझ पर विश्वास करता है वह मरने पर भी जीवित रहेगा; और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह कभी नहीं मरेगा। क्या आप इस पर विश्वास करते हैं?'"(यूहन्ना 11:25-26)

टिप्पणी: यीशु ने वादा किया था कि जो जीते हैं और विश्वास करते हैं, उनमें विश्वास और भरोसा रखते हैं, वे कभी नहीं मरेंगे। भले ही उनके भौतिक शरीर काम करना बंद कर देते हैं और उन्हें त्याग दिया जाना चाहिए, उनकी आत्माएं शाश्वत हैं और सीधे स्वर्ग में स्वर्ग के हिस्से में जाती हैं ताकि वे मसीह के साथ रहें, जिन्होंने घोषणा की, "मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूं।" (यूहन्ना 14:6)

"हम विश्वास करते हैं कि यीशु मर गया और फिर से जी उठा और इसलिए हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उन्हें यीशु के साथ लाएगा जो उसमें सो गए हैं।"(1 थिस्सलुनीकियों 4:14)

टिप्पणी: ईसाइयों की आत्माएं, जब उनके भौतिक शरीर मर जाते हैं, स्वर्ग में स्वर्ग में यीशु के साथ रहने के लिए जाते हैं जहां वे उनकी वापसी, दूसरे आगमन तक रहेंगे। चूंकि बचाए गए लोगों की आत्माएं स्वर्ग में हैं, तो यह समझ में आता है कि जब वह वापस आएंगे तो वे उनके साथ होंगे।

"मैं मसीह में एक व्यक्ति को जानता हूं जो चौदह वर्ष पहले तीसरे स्वर्ग तक ऊपर उठा लिया गया था। चाहे वह शरीर में था या शरीर से बाहर मैं नहीं जानता-ईश्वर जानता है। और मैं जानता हूं, कि यह मनुष्य न जाने देहसहित या देह के बिना, परन्तु परमेश्वर जानता

है, कि स्वर्गलोक पर उठा लिया गया है। उसने अकथनीय बातें सुनीं; ऐसी बातें जो मनुष्य को बताने की अनुमति नहीं है।(2 कुरिन्थियों 12:2-4)

टिप्पणी:पॉल को तीसरे स्वर्ग में पकड़ा गया था, आकाशीय स्वर्ग, ईश्वर का निवास और स्वर्ग, जहाँ मसीह ने उसे निर्देश दिया था, इसलिए स्वर्ग स्वर्ग में था न कि मसीह के स्वर्गारोहण के तुरंत बाद।

टिप्पणी: यहूदियों के लिए पहले स्वर्ग का अर्थ था वातावरण (हवाई आकाश), दूसरे स्वर्ग का अर्थ था बाहरी स्थान (नक्षत्र आकाश) और "तीसरा स्वर्ग" परमेश्वर का निवास स्थान था

"जब उन्होंने यह सुना, तो वे आग बबूला हो गए और उस पर दाँत पीसने लगे। परन्तु स्तिफनुस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान देखा। 'देखो,' उसने कहा, 'मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़ा हुआ देखता हूं।' इस पर उन्होंने अपने कान ढांप लिए, और जोर से चिल्लाते हुए उस पर झपटे, और उसे घसीटकर नगर के बाहर ले आए, और उस पर पथराव करने लगे। इस बीच, गवाहों ने शाऊल नाम के एक युवक के चरणों में अपने कपड़े रख दिए। जब वे उस पर पथराव कर रहे थे, तो स्तिफनुस ने प्रार्थना की, 'हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।' तब वह अपने घुटनों पर गिर गया और पुकार उठा, 'हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।' यह कहकर वह सो गया।"(प्रेरितों के काम 7:54-60)

मसीह के स्वर्गारोहण के बाद शरीर, आत्मा और आत्मा की नियति

ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी	**दुष्ट और विद्रोही**
आत्माभगवान के पास लौट आता है	**आत्मा**भगवान के पास लौट आता है
शरीरधूल में लौट जाता है	**शरीर**धूल में लौट जाता है
आत्मादूसरे आगमन की प्रतीक्षा में स्वर्ग में स्वर्ग जाता है।	**आत्मा**न्याय की प्रतीक्षा में अधोलोक में पीड़ा को जाता है।

तब, सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह होना चाहिए, "मुझे हमेशा के लिए बचाए जाने के लिए क्या करना चाहिए?" जो इस प्रश्न का उत्तर खोजेगा, उसके सामने एक गंभीर विकल्प होगा।

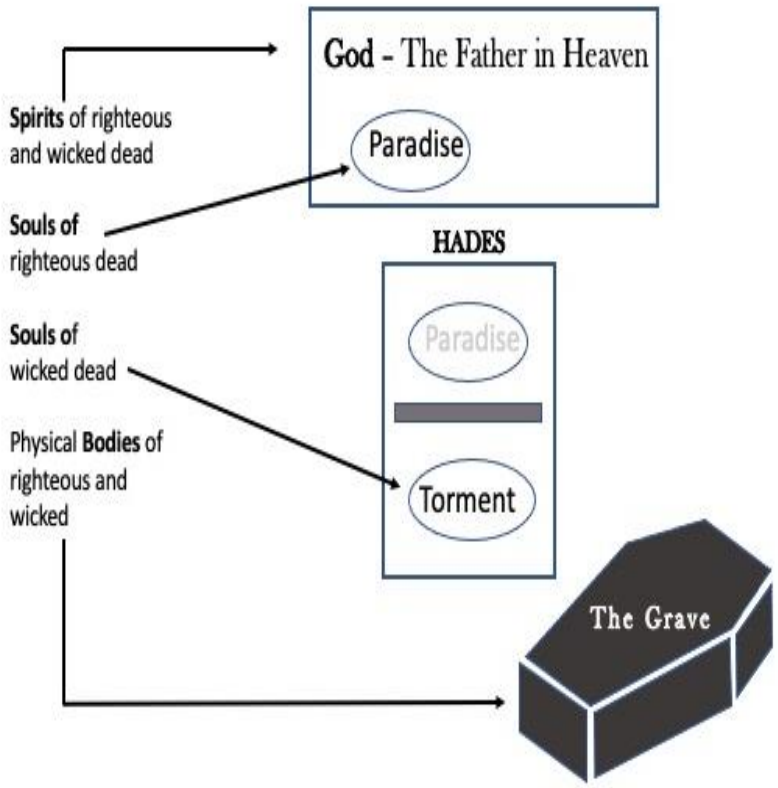

अध्याय 4

मसीह का दूसरा आगमन

"यह कहने के बाद वह उनके देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन की दृष्टि से छिपा लिया।" जब वह जा रहा था तो वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे कि अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। 'गलीली पुरुष,' उन्होंने कहा, 'तुम यहाँ आकाश की ओर क्यों खड़े हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।''(अधिनियम 1:9-11)

"उसके लिए जो हमसे प्यार करता है और जिसने हमें अपने खून से हमारे पापों से मुक्त कर दिया है, और हमें अपने परमेश्वर और पिता की सेवा करने के लिए एक राज्य और याजक बना दिया है - उसकी महिमा और शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए हो! तथास्तु। देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आंख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे; और पृथ्वी के सब कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। ये ऐसा होना चाहिए!"(प्रकाशितवाक्य 1:5-7)

"यहोवा अपने वचन को पूरा करने में देर नहीं करता, जैसा कि कुछ लोग धीमेपन को समझते हैं। वह तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो, परन्तु सब को मन फिराव का अवसर मिले।"(2 पतरस 3:9)

"हे सब थके हुए और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।"(मैट 11:28-30)

*"मेरे पिता के घर में बहुत से कमरे हैं। यदि ऐसा न होता, तो क्या मैं तुम से कह देता कि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं? और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। (*यूहन्ना 14:2-3)

"हम जो जीवित हैं, जो प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि यहोवा आप स्वर्ग से उतरेगा, उस आज्ञा के शब्द के साथ, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही का शब्द सुनाई देगा। और मसीह में मरने वाले पहले उदित होगें। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में यहोवा से मिलें, और इस रीति से हम सदा यहोवा के संग रहेंगे।"(1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17)

"समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया, और सब के कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया।"(प्रकाशितवाक्य 20:13)

टिप्पणी: "मौत" या कब्र ने भौतिक शरीर को त्याग दिया जो कि परिवर्तित होकर धूल में बदल गया था। "मसीह में मरे हुए," सभी धर्मियों के शरीर, परमेश्वर के साथ रहने के लिए अमर शरीर में बदल दिए जाएंगे जबकि सभी विद्रोही और दुष्टों के शरीर शैतान के साथ रहने के लिए अविनाशी शरीर में बदल दिए जाएंगे।

टिप्पणी: "अधोलोक" नहीं अधोलोक ने न्याय के लिए दुष्टों की आत्माओं को छोड़ दिया है।

टिप्पणी: बाइबल कहती है कि मसीह वापस आएगा लेकिन यह कोई संकेत नहीं देता है कि उसका दूसरा आगमन कब होगा।

"हे भाइयो, मैं तुम से यह कहता हूं, कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न नाशवान अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। निहारना! मैं आपको एक रहस्य बताता हूं। हम सब नहीं सोएंगे, लेकिन हम सब बदल जाएंगे, एक पल में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही पर। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी, और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे। अवश्य है कि यह नाशवान देह अविनाशी को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। जब नाशवान अविनाशी को पहिन लेगा, और मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया है।(1 कुरिन्थियों 15:50-54)

"जब प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा। वे यहोवा के सम्मुख से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्तकाल का दण्ड भोगेंगे।"(2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)

"और मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के साम्हने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गई। फिर एक और पुस्तक खोली गई, जो जीवन की पुस्तक है। और जैसे उन पुस्तकों में लिखा या, वैसे ही उन के कामोंके अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया, और उन में से एक एक का न्याय उनके कामोंके अनुसार हुआ। तब मृत्यु और अधोलोक को आग की झील में डाल दिया गया। आग की झील में, यह दूसरी मौत है। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।"(प्रकाशितवाक्य 20:12-15)

टिप्पणी: शारीरिक मृत्यु का परिणाम दुष्टों और धर्मियों के लिए समान होता है। उनका भौतिक शरीर कब्र में जाता है और पृथ्वी के तत्वों में लौट जाता है, जबकि उनकी आत्मा भगवान के पास लौट जाती है जिसने इसे दिया, लेकिन उनकी आत्मा के लिए ऐसा नहीं है। धर्मी लोगों की आत्माएं मसीह के साथ स्वर्ग में स्वर्ग जाती हैं। जिन लोगों के नाम "जीवन की पुस्तक" में नहीं लिखे गए हैं, वे मसीह के दूसरे आगमन और फिर न्याय की प्रतीक्षा में अधोलोक में पीड़ा में जाते हैं।

<u>भौतिक शरीर</u>

"अपने सृजनहार को भी स्मरण रख... इससे पहिले चान्दी का डोरा टूट जाए और सोने का कटोरा चूर चूर हो जाए, और कुएं के पास का घड़ा चूर चूर हो जाए, और हौज का पहिया चूर चूर हो जाए; तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी।"(सभोपदेशक 12:1; 6-7क)

"हमारी देह टूटेपन में गाडी गई है, परन्तु वे महिमा के साथ जी उठेंगी। वे निर्बलता में दबे हुए हैं, परन्तु बल में उठाए जाएंगे। उन्हें प्राकृतिक मानव शरीर के रूप में दफनाया जाता है, लेकिन उन्हें आध्यात्मिक शरीर के रूप में उठाया जाएगा। क्योंकि जैसे प्राकृतिक शरीर होते हैं, वैसे ही आत्मिक शरीर भी होते हैं।"(1 कुरिन्थियों 15:43-44)

"हे भाइयो, मैं तुम से यह घोषणा करता हूं, कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न नाशवान अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। सुनो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: हम सब सोएंगे नहीं, परन्तु सब बदल जाएंगे—पलक में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही के फूँकने पर। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी, मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम

बदल जाएँगे। क्योंकि नाशवान को अविनाशी को, और नश्वर को अमरता का वस्त्र पहिनना होगा। जब नाशवान् अविनाशी को और नश्वर अमरता को पहिन लेंगे, तब यह वचन जो लिखा है, सच हो जाएगा: "मृत्यु को जय ने निगल लिया है।"(1 कुरिन्थियों 15:50-54)

"इस पर आश्चर्य मत करो; क्योंकि वह समय आ रहा है जब सब कब्र में हैं(मृतक) उसकी (मसीह की) आवाज सुनेंगे और बाहर निकल आएंगे - जिन्होंने जीवन के पुनरुत्थान के लिए अच्छा किया है, और जिन्होंने न्याय के पुनरुत्थान के लिए बुराई की है। (यूहन्ना 5:28-29)

<u>वो आत्मा</u>
जीवित लोगों की आत्माएं जो मसीह में हैं, उनके पिता - प्रेम, विश्वासयोग्य, दयालु, सत्यवादी और शांतिप्रिय, ईश्वर की समानता और प्रकृति में बढ़ रही हैं। मसीह में मरे हुओं की आत्माएं मसीह के साथ स्वर्ग में हैं। दोनों मसीह की वापसी और दूसरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मसीह में नहीं रहने वालों की आत्माएँ शैतान की समानता में विकसित हो रही हैं, उनके पिता - झूठे, हत्यारे, विद्रोही, ईश्वर से नफरत करने वाले, स्वयं के प्रेमी और यौन अनैतिक। मृतकों की आत्माएँ दुष्ट और विद्रोही अधोलोक के पीड़ा पक्ष में मसीह के दूसरे आगमन और न्याय की प्रतीक्षा में रहती हैं।
"और उन से मत डरना जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते। बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।"(मत्ती 10:28)

> **टिप्पणी**: "नरक" ग्रीक शब्द जिनी से आया है जिसका अर्थ शैतान का निवास स्थान है न कि ग्रीक शब्द एडोस - दिवंगत आत्माओं का निवास।

> **टिप्पणी**: आत्मा नर्क में भी अविनाशी शरीर के साथ रहती है।

"मूसा ने कहा, 'प्रभु यहोवा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा। जो कुछ वह तुझ से कहे उसमें तू उसकी सुनना। और ऐसा होगा कि जो कोई उस भविष्यद्वक्ता की बात न माने वह लोगों में से नाश किया जाए।'"(प्रेरितों के काम 3:22-23)

"हे मेरे भाइयो, यदि तुम में से कोई सच्चाई के मार्ग से भटक जाए, और कोई उसको फेर लाए, तो जान ले कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह उस की आत्मा को मृत्यु से बचाएगा, और बहुत से पापों पर परदा डालेगा।"(याकूब 5:19-20)

> **टिप्पणी**: भौतिक शरीर और मनुष्य की आत्मा एक समान नहीं हैं। धर्मी मृतकों की आत्माएं चाहे कब्र में हों, समुद्र में गाड़ दी गई हों या दाह संस्कार कर दिया गया हो, स्वर्ग में चली गईं (अधोलोक में मसीह के स्वर्गारोहण तक और अब स्वर्ग में)। जबकि, दुष्टों की आत्मा न्याय की प्रतीक्षा में अधोलोक में पीड़ा में जाती है।

<u>मूल भावना</u>
मसीह के दूसरे आगमन के समय मनुष्य की आत्मा के साथ क्या होता है, इस बारे में बाइबल मौन है।

सभोपदेशक का लेखक कहता है कि शरीर सड़ जाएगा और वापस उस धरती पर लौट जाएगा जहाँ से वह आया था और "आत्मा उस परमेश्वर के पास लौट जाती है जिसने उसे दिया।" (सभोपदेशक 12:6-7)

"आत्मा के बिना शरीर मर चुका है।"(याकूब 2:26)

"यीशु ने कहा 'पिता, मैं आपके हाथों में अपनी आत्मा देता हूं। जब उन्होंने यह कहा था, तो उन्होंने अंतिम सांस ली।'"(लूका 23:46)

पत्थरवाह करने पर स्तिफनुस ने प्रभु को पुकारा और कहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर! … जब उसने यह कहा था, वह सो गया (मर गया)।" (प्रेरितों के काम 7:59; 60)

टिप्पणी: पृथक अमेरिकी भारतीयों, अफ्रीकी जनजातियों और ऑस्ट्रेलिया के आदिवासियों सहित पीढ़ियों, संस्कृतियों और नस्लों के अध्ययन से पता चलता है कि मानव जाति ने किसी वस्तु या अस्तित्व की पूजा की है। कोई केवल अनुमान लगा सकता है कि यह मनुष्य की आत्मा है, उसकी आत्मा है या दोनों की पूजा करने की यह तड़प है। वह तड़प या भावना क्षमा के लिए पर्याप्त नहीं है। परन्तु जो मसीह में हैं उन्हें भी परमेश्वर का आत्मा दिया गया है जब परमेश्वर ने उन्हें मसीह के राज्य में रखा।

<u>जो मसीह में हैं उन्हें परमेश्वर का आत्मा दिया गया</u>

"पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।"(अधिनियम 2:38)

"और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उस की आज्ञा मानते हैं।"(प्रेरितों के काम 5:32)

"क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?"(1 कुरिन्थियों 3:16)

"उसी में तुम पर भी, जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और उस पर विश्वास किया, तो प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी है।"(इफिसियों 1:13)

"जो शरीर में हैं वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। परन्तु तुम शरीर में नहीं परन्तु आत्मा में हो, यदि वास्तव में परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है। जिस किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, वह उसका नहीं है।"(रोमियों 8:8-9)

"आत्मा हमारी निर्बलता में हमारी सहायता करता है; क्योंकि हम नहीं जानते कि जिस रीति से प्रार्थना करनी चाहिए, वह कैसे करें। परन्तु आत्मा आप ही हमारी ओर से ऐसी आहें भर भरकर बिनती करता है, जो शब्दों से बाहर हैं; और मनों का जांचने वाला जानता है, कि आत्मा क्या सोचता है, क्योंकि परमेश्वर के लोगोंके लिथे उस की बिनती परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होती है।(रोमियों 8:26-27)

"जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं, उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, उन की सी चाल चल। पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में निवास करता है, इस अच्छे भण्डार की रखवाली कर जो तुझे सौंपा गया है।"(2 तीमुथियुस 1:13-14)

टिप्पणी: ईश्वर की आत्मा ईश्वर द्वारा आज्ञाकारी लोगों को दी जाती है जब वे मसीह की मृत्यु में डूबे हुए (बपतिस्मा प्राप्त) द्वारा पाप और दफनाने के लिए उनकी मृत्यु के बाद एक नया आध्यात्मिक प्राणी बनते हैं। मनुष्य के भीतर परमेश्वर का आत्मा मनुष्य की आत्मिक भावनाओं के साथ संचार करता है जिसे वह प्रार्थना में बोलने में असमर्थ है।

मसीह में क्या होता हैदूसराआ रहा?

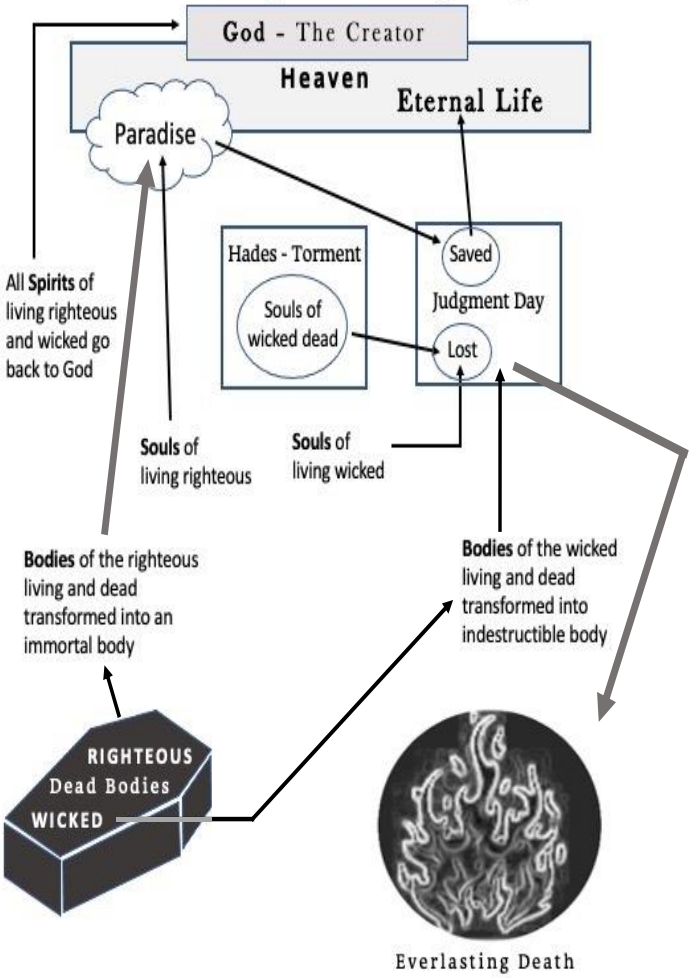

<u>मसीह में मरे हुए</u>

आत्मा मसीह के साथ बादल में आती है।

बादल में मसीह से मिलने के लिए देह को मसीह की महिमामयी देह, अमरता के समान रूपांतरित किया जाता है।

<u>जो मसीह में जीवित हैं</u>-धार्मिक।

आत्मा बादल में मसीह से मिलती है।

देह मसीह की महिमामय देह के समान रूपांतरित होती है, बादल में मसीह से मिलने के लिए अमरता।

<u>मरे हुए मसीह में नहीं</u>- दुष्ट और विद्रोही

आत्मा भगवान के पास रहती है।

शरीर एक अविनाशी शरीर में परिवर्तित हो जाता है।

आत्मा और शरीर शैतान और उसके दूतों के साथ अनन्त मृत्यु के लिए भेजे जाने वाले न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

<u>जो मसीह में जीवित नहीं हैं</u>- दुष्ट और विद्रोही न्याय का इंतजार करते हैं

आत्मा परमेश्वर के पास लौट आती है।

शरीर एक अविनाशी शरीर में परिवर्तित हो जाता है।

आत्मा और शरीर शैतान और उसके दूतों के साथ अनन्त मृत्यु के लिए भेजे जाने वाले न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

एक और व्याख्या

व्यक्तिगत तर्क और व्याख्या या उसके अभाव के आधार पर विभिन्न धार्मिक धारणाओं से कई विचार हैं। बहुत से लोग, यदि अधिकतर नहीं, विश्वास करते हैं कि जब वे मरते हैं तो सभी आत्माएं अधोलोक में जाती हैं और मसीह के दूसरे आगमन तक वहीं रहती हैं।

उनका मानना है कि मसीह ने हेड्स के स्वर्ग पक्ष में बंदी बनाए गए धर्मी लोगों को रिहा नहीं किया था और जब वह पिता के पास वापस गए तो उन्हें अपने साथ नहीं ले गए।

मसीह के दूसरे आगमन पर उसके साथ कोई धर्मी आत्मा नहीं होगी। धर्मियों के उनके शरीर अमर शरीरों में बदल दिए जाएंगे और पाताल के स्वर्ग में उनकी आत्माएं बादल में मसीह से मिलेंगी। तब वे परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं ताकि उन्हें परमेश्वर, मसीह और सभी स्वर्गीय सेना के साथ स्वर्ग में ले जाया जाए।

दुष्ट और विद्रोही शरीरों को अविनाशी शरीरों में बदल दिया जाएगा। अधोलोक की पीड़ा में उनकी आत्माओं के साथ उनके रूपांतरित अविनाशी शरीर, शैतान और उसके दूतों के साथ रहने के लिए नर्क में भेजे जाने से पहले शरीर में की गई चीजों को प्राप्त करने के लिए न्याय के लिए भगवान को जवाब देंगे।

अध्याय 5

कयामत के दिन क्या होता है?

"... मनुष्य के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है" (इब्रानियों 9:27)।

टिप्पणी: "एक बार मरने के लिए" फिर फैसला, कोई दूसरा मौका या पुनर्जन्म नहीं।

*"छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। ओर वह(*यीशु) उनके साम्हने रूपान्तरित हुआ, और उसका मुंह सूर्य की नाईं चमका, और उसका वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया। और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। (मत्ती 17:1-3)

टिप्पणी: तो, मूसा और एलिय्याह अभी भी अस्तित्व में थे क्योंकि केवल मांस मर गया था। उनकी वही पहचान थी जो भौतिक शरीर में होने पर होती थी। इसलिए, कोई पुनर्जन्म नहीं हो सकता था क्योंकि उनकी आत्माएं अभी भी हेडियन दुनिया में जीवित थीं क्योंकि पाप की क्षमा के लिए आवश्यक प्रायश्चित बलिदान परमेश्वर को नहीं चढ़ाया गया था।

"क्योंकि हम सब के सब परमेश्वर के न्याय आसन के साम्हने खड़े होंगे। क्योंकि लिखा है, 'यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, कि हर एक घुटना मेरे साम्हने झुकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर की स्तुति करेगी।' सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।"(रोमियों 14:10-12)

"क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने देह में रहते हुए किए गए भले बुरे कामोंका बदला पाए।"(2 कुरिन्थियों 5:10)

"जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब दूत उसके साथ आएंगे, तो वह स्वर्गीय महिमा में अपने सिंहासन पर विराजमान होगा। सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की जाएँगी, और जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को अपनी बाईं ओर रखेगा। तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ; अपना उत्तराधिकार ले लो, वह राज्य जो संसार के सृजन के समय से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है' ... 'उसकी बाईं ओर वालों से, 'हे शापित लोगों, मेरे पास से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।'"(मत्ती 25:31-34 … 42)

<u>धार्मिक</u>

"क्योंकि यहोवा आप ही स्वर्ग से उतरेगा, इस आज्ञा के शब्द के साथ, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही का शब्द सुनाई देगा। और मसीह में मरने वाले पहले उदित होगें। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में यहोवा से मिलें, और इस रीति से हम सदा यहोवा के संग रहेंगे।"(1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17)

दुष्ट

"जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब दूत उसके साथ आएंगे, तब वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा। सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की जाएँगी, और जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। और वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर, और बकरियों को बाईं ओर रखेगा।... "फिर वह अपने बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगों, मेरे पास से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।"(मत्ती 25:31-33 … 41)

"परन्तु कायरों, अविश्वासियों, नीचों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादू-टोना करनेवालों, मूर्तिपूजकों और सब झूठों का स्थान जलती हुई गंधक की जलती हुई झील में होगा। यह दूसरी मौत है।"(प्रकाशितवाक्य 21:8)

लेखकों की राय

धर्मी आत्माएं और उनके अमर शरीर स्वर्ग में परमेश्वर के साथ हमेशा के लिए रहने के लिए फिर से मिल जाएंगे। ऐसा नहीं है क्योंकि परमेश्वर के वचन के लिए विद्रोही और दुष्ट उनकी आत्मा और आत्मा को अलग कर देंगे। परमेश्वर की आत्मा उसके पास लौट आएगी। उनकी आत्मा और अविनाशी शरीर को शैतान और उसके दूतों के साथ, हमेशा की पीड़ा, नर्क में डाल दिया जाएगा। "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है। यह किसी भी दोधारी तलवार से अधिक पैना है, यहां तक कि आत्मा और आत्मा, जोड़ों और मज्जा को विभाजित करने के लिए भी छेद करता है; यह मन के विचारों और व्यवहारों का न्याय करता है।" (इब्रानियों 4:12-13)

क्या आप अनन्त जीवन या अनन्त मृत्यु के लिए जी रहे हैं?यह या तो स्वर्ग में परमेश्वर के साथ होगा या नर्क में शैतान और उसके दूतों के साथ होगा।

अध्याय 6

अनन्त जीवन

जो लोग मानते हैं कि अनन्त जीवन और अनन्त मृत्यु है, वे परमेश्वर के सिद्धांतों, उपदेशों और आज्ञाओं की कुछ व्याख्याओं का पालन करने का प्रयास करते हैं।

परमेश्वर अपेक्षा करता है कि एक व्यक्ति स्वीकार्य होने के लिए "मसीह में" हो। "इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत चुकी हैं; देखो, सब कुछ नया हो गया है।" (2 कुरिन्थियों 5:17)

टिप्पणी: इन लोगों की जीवनशैली में शामिल होंगे:

1. परमेश्वर से प्रेम करना, सम्मान करना, उसकी महिमा करना, उसकी स्तुति करना और उसकी आराधना करना जैसा उसने अपने वचन में निर्देशित किया है।
2. हर किसी के लिए, यहाँ तक कि अपने दुश्मनों के लिए भी अच्छा चाहना।
3. विधवाओं, अनाथों और विशेष रूप से ईसाइयों की जरूरतों को पूरा करना।

चूँकि यह "उसमें (मसीह में) हमें छुटकारा, अर्थात् हमारे पापों की क्षमा है," (इफिसियों 1:7) तो हमारी प्राथमिक चिंता यह सीखने की होनी चाहिए कि मसीह कैसे चाहता है कि हम जिएँ और फिर उसके अनुसार जिएँ। मसीह की आज्ञाएँ और शिक्षाएँ उसके वचन, बाइबल में पाई जाती हैं।

"एक अवसर पर कानून का एक विशेषज्ञ यीशु की परीक्षा लेने के लिए खड़ा हुआ। 'गुरु,' उसने पूछा, 'अनन्त जीवन का वारिस होने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?' 'क़ानून में क्या लिखा है?' उसने जवाब दिया। 'आप इसे कैसे पढ़ते हैं?' उसने उत्तर दिया: 'अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना'; और, 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' 'आपने सही उत्तर दिया है,' यीशु ने उत्तर दिया। 'ऐसा करो और तुम

जीवित रहोगे।' परन्तु वह अपने आप को धर्मी ठहराना चाहता था, सो उस ने यीशु से पूछा, 'मेरा पड़ोसी कौन है?'"(लूका 10:25-29)

"अच्छे सामरी के दृष्टांत" के रूप में जाने जाने वाले दृष्टांत के बारे में बताने के बाद, यीशु ने पूछा कि तीनों में से कौन - लेवी, पुजारी या सामरी - घायल आदमी का पड़ोसी था। "कानून के विशेषज्ञ ने उत्तर दिया, 'वह जिसने उस पर दया की।' यीशु ने उससे कहा, 'जा और ऐसा ही कर।'" (लूका 10:37)

हमें यह भी कहा गया है कि "इसलिये प्यारे बच्चों की नाईं परमेश्वर के सदृश बनो, और प्रेम से जीवन बिताओ, जैसा मसीह ने भी हम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे बलिदान करके दे दिया" (इफिसियों 5:1- 2) और *"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"*(यूहन्ना 14:15)

ऐसे कई निर्देश हैं जिन्हें मसीह में परमेश्वर के अनुकरणकर्ता बनने के लिए पालन करना चाहिए और इस प्रकार परमेश्वर के साथ बाद के जीवन में रहना चाहिए।

"संसार या संसार की किसी भी वस्तु से प्रेम मत करो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं। दुनिया में हर चीज के लिए- पापी आदमी की लालसा, उसकी आंखों की वासना और उसके पास क्या है और क्या है, इसका घमंड पिता से नहीं बल्कि दुनिया से आता है। संसार और उसकी अभिलाषाएँ मिट जाती हैं, परन्तु जो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा जीवित रहेगा।"(1 यूहन्ना 2:15-17)

"इस प्रकार हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के बच्चों से प्रेम करते हैं: परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी आज्ञाओं को पूरा करने के द्वारा। यह ईश्वर के लिए प्रेम है: उनकी आज्ञाओं का पालन करना। और उसके आदेश भारी नहीं हैं।"(1 यूहन्ना 5:2-3)

"यह वह संदेश है जो हमने उससे सुना है और आपको घोषित करते हैं: ईश्वर प्रकाश है, उसमें कोई अंधकार नहीं है। यदि हम उसके साथ संगति का दावा करते हुए भी अन्धकार में चलते हैं, तो हम झूठ बोलते हैं और सत्य पर नहीं चलते। परन्तु यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।"(1 यूहन्ना 1:5-7)

टिप्पणी: ईश्वर प्रकाश है - सभी अच्छी चीजें, खुले में की गई चीजें - प्रेम, सच्चाई, दया, दया, विश्वास।

टिप्पणी: शैतान अंधकार है - सभी बुराई, गुप्त रूप से की गई चीजें - घृणा, ईर्ष्या, झूठ, प्रतिशोध, स्वार्थ।

"जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो सको। और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ है, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।"(1 यूहन्ना 1:3)

"यदि हम बिना पाप के होने का दावा करते हैं, तो हम अपने आप को धोखा देते हैं और सच्चाई हम में नहीं है। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है, और हमारे पापों को क्षमा करेगा, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करेगा। यदि हम कहते हैं कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम उसे झूठा ठहराते हैं और उसके वचन का हमारे जीवन में कोई स्थान नहीं है।"(1 यूहन्ना 1:8-10)
"हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, पर आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं, क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल गए हैं। परमेश्वर के आत्मा को आप इस प्रकार पहचान सकते हैं: हर एक आत्मा जो यह मानती है कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है, परमेश्वर की ओर से है, परन्तु हर एक आत्मा जो यीशु को नहीं पहचानती वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके बारे में तुमने सुना है कि वह आ रही है और अब भी संसार में आ चुकी है।"(1 यूहन्ना 4:1-3)

टिप्पणी: "मसीह-विरोधी" वे हैं जो इस बात से इनकार करते हैं कि नासरत के यीशु मांस और रक्त के मानव शरीर में भगवान थे।

"तब हम आगे को बालक न रहेंगे, जो मनुष्योंकी चतुराई और धूर्तता की, और मनुष्योंकी छल की युक्ति की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर उधर उड़ाए जाते हैं। इसके बजाय, प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, हम सब बातों में उस में बढ़ते जाएंगे जो सिर है, अर्थात् मसीह। उसी से सारी देह, सब सहायक बंधनों से जुड़कर, एक साथ जुड़कर, प्रेम में बढ़ती और निर्मित होती है, क्योंकि प्रत्येक अंग अपना काम करता है। सो मैं तुम से यह कहता हूं, और प्रभु में इस बात पर जोर देता हूं, कि तुम्हें अब से अन्यजातियों की नाईं, उनके विचार की व्यर्थता में जीवन न बिताना पड़े। उनकी समझ में अंधेरा कर दिया गया है और उनके दिलों की कठोरता के कारण उनमें जो अज्ञानता है, उसके कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग हो गए हैं। सारी संवेदनशीलता खोकर, उन्होंने अपने आप को कामुकता के हवाले कर दिया है ताकि हर तरह की अशुद्धता में लिप्त हो जाएँ,(इफिसियों 4:14-19)

*"इसलिए, परमेश्वर के चुने हुए, पवित्र और प्रिय लोगों के रूप में, अपने आप को करुणा, दया, विनम्रता, नम्रता और धैर्य से सुसज्जित करें*एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे के प्रति तुम्हारे मन में जो भी शिकायतें हों उन्हें क्षमा कर दो। क्षमा करें, क्योंकि ईश्वर आपको माफ़ करता है।*इन सब के ऊपर प्रेम को बान्ध लो, जो सब वस्तुओं को एक साथ पूर्ण रीति से बन्धन में रखता है।मसीह की शान्ति तुम्हारे हृदय में राज्य करे, क्योंकि तुम एक ही देह के अंग होकर शान्ति के लिये बुलाए गए हो। और आभारी रहो। जब तुम एक दूसरे को सिखाते और समझाते हो, तो मसीह के वचन को अपने मन में बहुतायत से वास करने दो।*वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों 3:12-17)

टिप्पणी: "वचन या कर्म" बोले गए या किए गए कार्य हैं। वे या तो शांति और प्रेम या संघर्ष और घृणा हो सकते हैं।

"इसी कारण अपने विश्वास में भलाई बढ़ाने का यत्न करो; और अच्छाई को ज्ञान; और ज्ञान के लिए, आत्म-संयम; और आत्म-नियंत्रण, दृढ़ता के लिए; और धीरज पर भक्ति, और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति; और भाईचारे की प्रीति पर, प्रेम। क्योंकि यदि ये गुण तुम में बढ़ते जाएं, तो ये तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में तुम्हारे ज्ञान में निकम्मे और अनुत्पादक होने से बचाएंगे।"(2 पतरस 1:5-8)

"अन्तिम समय में ठट्ठा करनेवाले होंगे, जो अपनी अभक्ति की इच्छाओं के अनुसार चलेंगे।" पवित्र विश्वास और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करो। अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में रखो क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की प्रतीक्षा करते हो ताकि तुम्हें अनंत जीवन मिले। संदेह करने वालों पर दया करो; दूसरों को आग से छीनो और उन्हें बचाओ; दूसरों को दया दिखाओ, और बिगड़े हुए शरीर के कपड़ों पर भी भय-घृणा मिली हुई हो।"(जुड 18-23)

टिप्पणी: ऊपर से यह स्पष्ट है कि जो मसीह में हैं उन्हें बढ़ना चाहिए। इसलिए, महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि "मैं कैसे बढ़ूँ ताकि मेरा जीवन परमेश्वर को प्रतिबिम्बित करे?" मैं उसके सार और प्रकृति की स्पष्ट समानता को लगातार प्रतिबिंबित करके परमेश्वर के समान बन सकता हूँ- प्यार, दया, दया, सच्चाई और न्याय जैसे-जैसे मैं बड़ा होता जाता हूं।

अध्याय 7

अनन्त मृत्यु

जो न तो बाद के जीवन में विश्वास करते हैं और न ही मृत्यु के बाद या विश्वास करते हैं कि हर कोई भगवान के साथ अनंत काल तक जीवित रहेगा:

1. खाओ, पियो और मौज करो कल के लिए तुम मर सकते हो।
2. जो मेरा है वह मेरा है। तुम्हारा क्या है, चाहूँ तो ले लूँ।
3. जो जीवन में सबसे ज्यादा चीजें हासिल कर लेता है वह जीत जाता है।

4. मैं न किसी से डरता हूं, न परमेश्वर से, न मनुष्य से। मैं शक्ति वाला हूँ।

नतीजतन, वे आदम और हव्वा, कैन, एसाव और यहूदा के कार्यों का पालन करते हुए अपनी इच्छाओं को पूरा करते हैं और जो वे करना चाहते हैं वह करते हैं बजाय इसके कि परमेश्वर क्या चाहता है। उत्पत्ति 2:16-17 में परमेश्वर ने उनसे कहा, "तू बाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; परन्तु भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा। लेकिन उत्पत्ति 3:4-6,13 में हम पढ़ते हैं "तब सर्प ने स्त्री से कहा, 'तू निश्चय न मरेगी। क्योंकि परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिथे चाहने योग्य भी है, तब उस ने उस में से तोड़कर खाया। और उसने अपने पति को भी दिया, और उस ने भी खाया।" ... "और यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा,

> **टिप्पणी**: आदम और हव्वा ने झूठ पर विश्वास किया। एसाव ने उनकी इच्छाओं के आगे समर्पण कर दिया, जबकि यहूदा, एक लोभी व्यक्ति, पैसे की इतनी बुरी लालसा में, उसने यीशु को धोखा देकर और उसके "मित्रों" से चोरी करके अनन्त मृत्यु को चुना।

याकूब ने याकूब 1:12-15 में इसे इस तरह से रखा है "धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि जब वह खरा उतरा जाएगा, तब वह जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है। जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु हर एक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषाओं में खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जन्म देती है; और पाप जब बढ़ जाता है, तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।"
इसलिए, आदम और हव्वा की आज्ञा न मानने से, उनकी इच्छाओं के आगे झुक जाने से, मृत्यु ने संसार में प्रवेश किया - पाप का परिणाम। "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।" (रोमियों 5:12)

> **टिप्पणी**: परमेश्वर ने कहा, "भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तुम कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन अवश्य मर जाओगे।" (उत्प. 2:17) इसलिए, यह परमेश्वर की अवज्ञा, पाप था, कि मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई थी - पाप नहीं।

लेकिन आशा है "क्योंकि जैसे तू ने अपने अंगों को अशुद्धता और अधर्म के दास करके और अधिक अधर्म की ओर ले जाने को ठहराया था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के निमित्त धर्म के दास करके सौंप दे। क्योंकि जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म के विषय में स्वतंत्र थे। उस समय जिन बातों से तुम लज्जित होते हो, उनका क्या फल हुआ? क्योंकि उन बातों का अन्त मृत्यु है। परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर, और परमेश्वर के दास बनकर, तुम्हारे पास पवित्रता का फल, और अन्त, अनन्त जीवन है। क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है।" (रोमियों 6:19-23)

निम्नलिखित उन बातों के कई संदर्भ हैं जिन्हें परमेश्वर पाप, अधर्म, विद्रोह और अवज्ञा मानता है। जो लोग ऐसा अभ्यास करते हैं वे मृत्यु के बाद जीते हैं।

उत्पत्ति 6:5-6- "और परमेश्वर ने देखा, कि मनुष्य की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उसके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है। और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ।
उत्पत्ति 13:13- "परन्तु सदोम के लोग यहोवा की दृष्टि में अत्यन्त दुष्ट और पापी थे।"

उत्पत्ति 19:4-5- "उन्होंने लूत को पुकारा, "जो पुरुष आज रात को तुम्हारे पास आए हैं वे कहां हैं? उन्हें हमारे पास बाहर ले आओ ताकि हम उनके साथ यौन संबंध बना सकें।"

> **टिप्पणी**: अप्राकृतिक सेक्स की इच्छा - समान लिंग के साथ सेक्स।

इफिसियों 5:5- "इसके लिए आप सुनिश्चित हो सकते हैं: कोई अनैतिक, अशुद्ध या लालची व्यक्ति - ऐसा व्यक्ति एक मूर्तिपूजक है - के पास मसीह और परमेश्वर के राज्य में कोई विरासत नहीं है।"

इब्रानियों 10:26-31- "यदि हम सच्चाई का ज्ञान प्राप्त करने के बाद जानबूझ कर पाप करते हैं, तो अब पापों के लिए कोई बलिदान नहीं रहता है, लेकिन न्याय की एक भयानक प्रतीक्षा, और उग्र क्रोध जो विरोधियों को भस्म कर देगा। जो कोई मूसा की व्यवस्था को अस्वीकार करता है वह दो या तीन गवाहों की गवाही पर बिना दया के मर जाता है। क्या तुम समझते हो, कि वह कितने बड़े दण्ड के योग्य समझा जाएगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पांवोंसे रौंदा, वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया या, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया? क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा, 'पलटा लेना मेरा काम है, मैं बदला दूंगा,' यहोवा की यही वाणी है। और फिर, 'यहोवा अपनी प्रजा का न्याय करेगा।' जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।"

याकूब 1:19-21- "सो हे मेरे प्रिय भाइयो, हर एक मनुष्य सुनने के लिये फुर्ती करे, बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो; क्योंकि मनुष्य के क्रोध से परमेश्वर की धामिर्कता उत्पन्न नहीं होती। इसलिए सारी मलिनता और दुष्टता की बाढ़ को दूर करके नम्रता से उस वचन को ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।"

2 पतरस 2:4-11- "क्योंकि यदि परमेश्वर ने पाप करने वाले स्वर्गदूतों को नहीं छोड़ा, परन्तु उन्हें अधोलोक में डाल दिया, और न्याय के लिये बन्दी रखने के लिये अन्धेरे की जंजीरों में डाल दिया; और प्राचीन संसार को नहीं छोड़ा, परन्तु आठ लोगों में से एक नूह को, जो धर्म का प्रचारक था, दुष्टों के संसार में जलप्रलय लाकर बचाया; और सदोम और अमोरा के नगरोंको भस्म करके भस्म कर डाला, और उन्हें सत्यानाश कर डाला, और उन लोगोंके लिथे एक आदर्श बनाया जो बाद में भक्तिहीन होकर जीवन व्यतीत करेंगे; और धर्मी लूत को छुड़ाया, जो दुष्टों के अशुद्ध चालचलन के कारण सता रहा था (क्योंकि उस धर्मी ने उनके बीच में रहकर, उनके अधर्म के कामों को देखकर और सुनकर दिन प्रतिदिन अपने धर्मी मन को पीड़ित किया) - तब यहोवा जानता है कि उसे कैसे छुड़ाना है प्रलोभनों से धर्मी और अन्यायियों को न्याय के दिन के लिए दण्ड के अधीन रखने के लिए, और विशेष करके वे जो शरीर के अनुसार अशुद्धता की अभिलाषा में चलते हैं, और अधिकार को तुच्छ जानते हैं। वे दंभी, स्वेच्छाचारी हैं। वे ऊँचे-ऊँचे लोगों की निन्दा करने से नहीं डरते, जबकि स्वर्गदूत, जो अधिक सामर्थ्य और सामर्थ्य में हैं, यहोवा के सामने उनकी निन्दा नहीं करते।"

2 पतरस 2:12-17- "लेकिन ये, प्राकृतिक क्रूर जानवरों की तरह पकड़े जाने और नष्ट होने के लिए, उन चीजों की बुराई करते हैं जिन्हें वे नहीं समझते हैं, और पूरी तरह से अपने भ्रष्टाचार में नष्ट हो जाएंगे, और अधर्म की मजदूरी प्राप्त करेंगे, जो इसे खुशी मानते हैं दिन में हिंडोला। वे कलंक और कलंक हैं, जब वे तुम्हारे साथ खाते पीते हैं, तब अपके ही धोखे की बातें करते हैं, उनकी आंखें व्यभिचार से भरी हुई हैं, और जो पाप से नहीं हटतीं, वे अस्थिर मन को लुभाते हैं। उनके पास एक दिल है जो लोभ प्रथाओं में प्रशिक्षित है, और शापित बच्चे हैं। वे सीधे मार्ग को छोड़कर भटक गए हैं, और बोर के पुत्र बिलाम की सी चाल चले हैं, जिस ने अधर्म की मजदूरी से प्रीति रखी; परन्तु उसके अधर्म के कारण उसकी निन्दा की गई: गूंगी गदही ने मनुष्य का सा बोल बोलकर भविष्यद्वक्ता के पागलपन को रोक दिया। ये बिना पानी के कुएँ हैं, आँधी द्वारा उड़ाए गए बादल हैं,

> **टिप्पणी**: ईसाईयों के साथ इकट्ठा होने वाले लोग जो दिन में ईसाई होने का दावा करते थे, उनकी आँखें व्यभिचार से भरी थीं, और लोभी थीं। वे सही रास्ते को छोड़कर भटक गए थे।

2 थिस्सलुनीकियों 1:3-10- "हे भाइयो, जैसा उचित है, तुम्हारे लिये हम सदा परमेश्वर का धन्यवाद करने को बाध्य हैं, क्योंकि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता है, और तुम सब का प्रेम आपस में बढ़ता जाता है, यहां तक कि हम आप की कलीसियाओं में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं।" भगवान आपके धैर्य और विश्वास के लिए आपके सभी उत्पीड़न और कष्टों में जो आप सहन करते हैं, *जो हैपरमेश्वर के धर्मी न्याय का प्रमाण दिखाओ, जिस से तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो, जिस के लिये तुम दुख भी उठाते हो; क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में यह उचित है, कि जो तुम को क्लेश देते हैं उन्हें क्लेश दिया जाए, और जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें हमारे साथ विश्राम दें, जब कि प्रभु यीशु अपके सामर्थी दूतोंके साय, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट हो।जो परमेश्वर को नहीं जानते, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा ले। ये यहोवा के सम्मुख से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर सदा के*

विनाश का दण्ड पाएंगे, जब वह उस दिन आएगा, कि उसके पवित्र लोगों में उसकी महिमा हो, और सब विश्वास करनेवालों में उसकी प्रशंसा हो, क्योंकि तुम ने हमारी गवाही की प्रतीति की थी।
प्रकाशितवाक्य 20:10- "उनका भरमानेवाला शैतान, आग और गन्धक की उस झील में, जहां वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता है, डाल दिया गया। और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।"

प्रकाशितवाक्य 21:8- "लेकिन कायर, अविश्वासी, घृणित, हत्यारे, यौन अनैतिक, जादूगर, मूर्तिपूजक और सभी झूठों का हिस्सा उस झील में होगा जो आग और गंधक से जलती है, जो दूसरी मौत है।"

1 यूहन्ना 1:10- "यदि हम कहते हैं कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।"

टिप्पणी: अब मृत्यु के बाद की प्रकृति के बारे में बहुत बहस हो सकती है। क्या यह शाब्दिक या लाक्षणिक है, कभी न खत्म होने वाली पीड़ा या सर्वनाश और बार-बार? मृत्यु के बाद की प्रकृति के बावजूद यह इतना भयानक और इतना अंतिम होगा कि कोई भी अपने सही दिमाग में वहां नहीं भेजना चाहेगा। मृत्यु के बाद के शाश्वत निवासी होंगे:

विद्रोह करने वाले कोण
शैतान (शैतान)
जानवर
झूठा पैगंबर
कायर (भयभीत)
नास्तिक
घिनौना
हत्यारे
झूठे
यौन अनैतिक (व्यभिचारी)
जादूगर
मूर्तिपूजक

अच्छी खबर यह है कि मृतकों की भूमि में प्रवेश करने के लिए मरने वालों की भूमि को छोड़ना आवश्यक नहीं है।
"सुन, मैं ने आज तेरे साम्हने जीवन और भलाई, मृत्यु और बुराई रखी है, इसलिथे मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं, कि तू अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखना, और उसके मार्गोंपर चलना, और उसकी आज्ञाओं, विधियोंऔर नियमोंको मानना, आप जीवित रह सकते हैं और गुणा कर सकते हैं; और तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में तुझे आशीष देगा जिसके अधिक्कारनी होने को तू जा रहा है।

"परन्तु यदि तेरा मन ऐसा फिर जाए कि तू न सुने, और बहक जाए, और पराए देवताओं को दण्डवत करे और उनकी उपासना करे, तो मैं आज तुझ से यह कह देता हूं, कि तू निश्चय नाश हो जाएगा; और जिस देश के अधिकारी होने को तुम यरदन पार जा रहे हो उस में तुम बहुत दिन रहने न पाओगे। मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध इस बात की साक्षी बनाता हूं, कि मैं ने तुम्हारे आगे जीवन और मरण, आशीष और श्राप रखे हैं; इसलिथे तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनोंजीवित रहें; जिस से तू अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखे, और उसकी बात माने, और उसी से लिपटे रहे, क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घकाल वही है; और जिस देश के विषय में यहोवा ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, तुम्हारे पूर्वजोंसे शपय खाकर उनको देने की शपय खाई यी उसी में तुम बसे रहोगे।(व्यव. 30:15-20)

टिप्पणी: इस्राएल के लिए यहोवा की भूमि "वादा की हुई भूमि" थी - कनान। आज "प्रभु की भूमि" "ईश्वर का राज्य" क्राइस्ट चर्च, क्षमा की भूमि है। इस पर बाइबिलवे पब्लिशिंग किताब ए किंगडम नॉट मेड विद हैंड्स में चर्चा की गई है।

परमेश्वर की इच्छा है कि जो उसके स्वरूप (उसके स्वभाव) में सृजे गए हैं, वे उसके साथ मेल-मिलाप करें और उसके साथ घनिष्ठ

संबंध रखें, जो मसीह के लहू, मृत्यु में उनके गाड़े जाने के तुरंत बाद घटित होता है। "*यहोवा अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसा कुछ लोग समझते हैं, परन्तु वह तुम्हारे साथ धीरज धरता है। वह नहीं चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु वह चाहता है कि सब लोग पश्चाताप करें।*"(2 पतरस 3:9) "*आप देखते हैं, बिल्कुल सही समय पर, जब हम अभी भी शक्तिहीन थे, मसीह दुष्टों के लिए मरा। .... परन्तु परमेश्वर हम पर अपना प्रेम इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा। जब हम अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के प्रकोप से क्यों न बचेंगे!*"(रोमियों 5:6-10)

> **टिप्पणी**: "पश्चाताप" "मात्र भावना नहीं है; इसमें मूड और भावनाओं की अनिश्चितता नहीं है। यह आत्मा के मौसम में साधारण परिवर्तन नहीं है। यह बुद्धि के फोकस का एक विशिष्ट परिवर्तन है; यह अपने साथ संकल्प की गति करता है; संक्षेप में, यह मनुष्य के अस्तित्व के आधार पर एक क्रांति है" ("द पल्पिट कमेंट्री", खंड 18, पृष्ठ 66 "प्रतिबिंब" #515 अल मैक्सी, 3 जनवरी, 2012 में उद्धृत)

तब, सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह होना चाहिए - "बचाए जाने और परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए कि मुझे क्षमा किया जाए। जो इस प्रश्न का उत्तर खोजेगा उसके सामने एक गंभीर चुनाव होगा - एक चिरस्थायी निर्णय। पुराने इस्राएलियों की तरह, आपको "जीवन" या "मृत्यु" चुननी होगी।

अध्याय 8

मुझे क्या करना चाहिए?

मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि मैं एक पापी हूँ जिसे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

बहुत से लोग एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता महसूस नहीं करते हैं क्योंकि उन्हें नहीं लगता कि वे क्षमा की आवश्यकता में खोए हुए हैं। क्या यह एक हृदयस्पर्शी उपदेश सुनने से आता है; शायद एक दोस्त जो आपके साथ सच्चाई साझा करता है; शायद कोई ट्रैक्ट पढ़कर; जो भी हो, किसी न किसी तरह से आपको समझ में आ जाना चाहिए कि "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। जैसा भविष्यद्वक्ता यशायाह ने बहुत पहले कहा था: "हमारे पापों ने परमेश्वर का मुख हम से ऐसा छिपा दिया है कि वह नहीं सुनता" (यशायाह 59:2)। हमारा अपना पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है! "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23)। यह एक आत्मिक मृत्यु है, जो खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर से अलगाव है।

"लेकिन मेरे अच्छे कामों के बारे में क्या?" कोई कह सकता है। उत्तर है: "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं; यह परमेश्वर का दान है, न कि कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों 2:8-9)

"परन्तु मेरे पाप छोटे हैं," दूसरे कहते हैं, परन्तु "जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है, परन्तु एक बात में चूक जाए, वह सब बातों में दोषी है।" (याकूब 2:10)

मनुष्य का अभिमान और आत्मनिर्भरता मोक्ष के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। वह जो यह मानने से इंकार करता है कि वह एक पापी है जिसे क्षमा की आवश्यकता है वह खो गया है और उसे बचाया नहीं जा सकता है।

क्या आप एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता में पापी होने की निराशा को समझ गए हैं?

मुझे यह पहचानना चाहिए कि यीशु ही मुक्ति की एकमात्र आशा है।

मोक्ष का और कोई उपाय नहीं है। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु पापियों को बचाने, मुक्त करने और फिरौती देने में सक्षम है। यूहन्ना 14:6 में, यीशु ने घोषणा की: "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" परमेश्वर

तक पहुँचने का एकमात्र तरीका मसीह के द्वारा है। हम प्रेरितों के काम 4:12 में भी पढ़ते हैं, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" मोहम्मद, बुद्ध, यहूदी धर्म, हिंदू देवताओं या किसी भी धार्मिक संगठन पर भरोसा करके हम बचाए नहीं जा सकते। न ही हम "मसीहियत" की अपनी खुद की प्रणाली को विकसित कर सकते हैं जैसा कि आज किया जा रहा है और उम्मीद करते हैं कि यह हमें बचाएगा। केवल यीशु मसीह ही हमारे उद्धार की शर्तों को निर्दिष्ट कर सकता है, क्योंकि उसने हमारी कीमत चुकाई है और वह हमारा एकमात्र उद्धारकर्ता है। और कोई रास्ता नहीं।

क्या आप अपने आप को उस एकमात्र व्यक्ति के चरणों में गिरने के लिए तैयार हैं जो आपको बचा सकता है - यीशु मसीह?

मुझे इस खुशखबरी पर विश्वास करना चाहिए कि यीशु मसीह पृथ्वी पर आया, एक सिद्ध जीवन जिया, सूली पर चढ़ाया गया, (परिपूर्ण प्रायश्चित बलिदान) मेरे पापों के लिए, गाड़ा गया, तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठा और अब हमेशा के लिए परमेश्वर के दाहिने हाथ में रहता है मसीह के शरीर, उसके चर्च, एक जीवित जीव में उन लोगों के लिए हस्तक्षेप करने के लिए कुछ संगठन नहीं।

यीशु ने हमारे लिए जो किया उसे "सुसमाचार" कहा जाता है, जिसका अर्थ है "सुसमाचार!" मरकुस में, यीशु हमें बताता है कि हमें इस सुसमाचार पर विश्वास करना चाहिए ताकि बचाया जा सके।

> मार्क 16: 15-16 - "सारी दुनिया में जाओ और सारी सृष्टि को खुशखबरी सुनाओ। जो कोई विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।"

यह कैसी कहानी है! मानव रूप में परमेश्वर, नासरत के यीशु के रूप में, कितनी ही परीक्षाओं से गुजरा परन्तु उसने कभी पाप नहीं किया!

> 1 पतरस 2:21 - "तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम उसके चिन्ह पर चलो।"

उसने अपनी दिव्यता सिद्ध करने के लिए बहुत से चिह्न और चमत्कार किए।

> यूहन्ना 20:30-31 - "यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।"

वह हमारे लिए मरा - हमारे सारे पापों के लिए परमेश्वर के लिए एक बलिदान!

> इब्रानियों 1:10-14 - "वह यह भी कहता है, 'आदि में, हे यहोवा, तू ने पृथ्वी की नेव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों का काम है। वे नाश होंगे, परन्तु तू बना रहेगा; वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएंगे। तू उन्हें बागे की नाईं लपेटेगा; वे वस्त्र के समान बदल जाएंगे। परन्तु तुम वैसे ही बने रहो, और तुम्हारे वर्ष कभी समाप्त न होंगे।'"
>
> *"परमेश्वर ने किस स्वर्गदूत से कभी कहा, कि तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवोंके नीचे की पीढ़ी न कर दूं? क्या सभी स्वर्गदूत सेवा करने वाली आत्माएँ नहीं हैं जो उनकी सेवा करने के लिए भेजी जाती हैं जो उद्धार प्राप्त करेंगे?'"*

अंत में, वह मरे हुओं में से जी उठा, यह प्रमाणित करते हुए कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

> रोमियों 1:4-5 - "जिसको पवित्रता की आत्मा के द्वारा मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया: यीशु मसीह हमारा प्रभु। उन्हीं के द्वारा और उनके नाम के निमित्त हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली है, कि सब अन्यजातियों में से उस आज्ञाकारिता के लिये जो विश्वास से आती है, लोगों को बुलाएं।"
>
> 1 कुरिन्थियों 15:1 - "हे भाइयो, मैं तुम्हें उस सुसमाचार की सुधि दिलाना चाहता हूं जो मैं ने तुम्हें सुनाया था, जिसे तुम ने ग्रहण किया, और जिस पर तुम स्थिर हुए हो।" क्या शानदार कहानी है!

मुझे अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहिए।

लूका 13:3 में यीशु कहता है, "... यदि तुम मन न फिराओगे, तो तुम सब भी इसी रीति से नाश हो जाओगे।" यह या तो पछताता है या नष्ट हो जाता है; चुनाव हमारा है। प्रेरितों के काम 17:30 कहता है, "परमेश्वर ने अज्ञानता के इस समय पर ध्यान नहीं दिया, परन्तु अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" हर जगह के सभी लोगों को, और जिसमें आप और मैं भी शामिल हैं, परमेश्वर की ओर से पश्चाताप करने की आज्ञा दी गई है। किस बात का पश्चाताप? हमारे पापों का पश्चाताप। परमेश्वर जो कुछ कहता है उसकी पूरी तरह से सेवा और पालन न करने का पश्चाताप। परमेश्वर हमसे पश्चाताप करने की याचना कर रहा है। वह बहुत चाहता है कि हम उसकी ओर फिरें। वह हमें 2 पतरस 3:9 में बताता है, "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसा कि कितने लोग देर से समझते हैं; परन्तु वह हमारे प्रति धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो, परन्तु यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।" परमेश्वर चाहता है कि हम पश्चाताप करें ताकि हम बचाए जा सकें। वह धैर्यपूर्वक हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। लेकिन अंततः हमारा समय समाप्त हो जाएगा। जितनी देर हम पश्चाताप को टालेंगे,

पछताना सिर्फ पछताना नहीं है। 2 कुरिन्थियों 7:10 कहता है, "ईश्वरीय दुःख के लिए पश्चाताप पैदा होता है जो उद्धार की ओर ले जाता है, न कि पछताने के लिए; परन्तु संसार का दुःख मृत्यु उत्पन्न करता है।" पश्चाताप हृदय का परिवर्तन और मन का परिवर्तन है। हमें अपने जीवन को अपने तरीके से जीने से रोकने के लिए अपना मन बनाना चाहिए और इसे भगवान के तरीके से जीना शुरू करना चाहिए। यह हमारा मन बना रहा है कि हम अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर की सेवा करने जा रहे हैं और वह सब कुछ करेंगे जो वह कहता है। मत्ती 22:37, "यीशु ने उस से कहा, तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना।" दूसरे शब्दों में, हमें इसे अपने पूरे अस्तित्व के साथ करना चाहिए।

रोमियों 2:4 कहता है, "परमेश्वर की भलाई तुम्हें मन फिराव की ओर ले जाती है।" परमेश्वर हमारे लिए बहुत अच्छा रहा है, और इससे हमें हर तरह से उसे प्रसन्न करने की इच्छा होनी चाहिए। परमेश्वर ने, हमारे प्रति अपने प्रेम के कारण, हमारे लिए इतना कुछ किया है, और इस कारण से हम 1 यूहन्ना 4:19 में पढ़ते हैं, "हम उससे प्रेम करते हैं, क्योंकि उसने पहिले हम से प्रेम किया।" इससे हमें पश्चाताप करने की इच्छा होनी चाहिए और वह सब कुछ करें जो उसने हमसे करने के लिए कहा है, अन्यथा हम परमेश्वर से प्रेम नहीं करते। यीशु ने यूहन्ना 14:24 में कहा, "जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचनों को नहीं मानता।"

क्या आप भगवान से प्यार करते हैं? यदि आप करते हैं, तो आप वह सब कुछ करना चाहेंगे जो वह कहता है। यूहन्ना 14:15 में यीशु कहते हैं, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं का पालन करो।" क्या आप पश्चाताप करके परमेश्वर को अपना प्रेम दिखाने को तैयार हैं? अपने सभी पापों और अवज्ञा को त्याग कर? यह तय करके कि आप अपना जीवन यीशु के पीछे चलने और उसकी आज्ञा मानने के लिए दे देंगे? यीशु ने कहा: "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले" (मरकुस 8:34)। क्या आपने फैसला किया है कि आप अब और पाप नहीं करना चाहते हैं? यदि ऐसा है, तो अब आप मसीह के साथ एक होने के लिए तैयार हैं।

मुझे यीशु को कबूल करना चाहिए

यीशु चाहता है कि हम उसे मनुष्यों के सामने अंगीकार करें। मत्ती 10:32-33 में वह कहता है, "इसलिये जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मान लूंगा। परन्तु जो कोई मनुष्यों के साम्हने मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने इन्कार करूंगा। यदि हम मसीह का इन्कार करते हैं तो हम खो जाने वाले हैं। हमें दूसरे लोगों के सामने यह स्वीकार करने में शर्म नहीं आनी चाहिए कि हम मानते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। मरकुस 8:38 में यीशु कहते हैं, "क्योंकि जो कोई इस व्यभिचारी और पापी पीढ़ी के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी उस से लजाएगा, जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा।" यदि वह हमसे लज्जित है तो इसका अर्थ है कि हम नष्ट होने जा रहे हैं।

बाइबल में लोगों के मसीह में अपने विश्वास को स्वीकार करने के कई उदाहरण हैं। एक मत्ती 16:16-17 में पाया जाता है, "शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उस को उत्तर दिया, हे शमौन बर्जोना, तू धन्य है, क्योंकि मांस

और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। पतरस के अंगीकार से मसीह बहुत प्रसन्न हुआ और वह हमारे साथ भी रहेगा।

प्रेरितों के काम 8:36-37 में एक व्यक्ति ने प्रश्न पूछा, "देखो, यहाँ जल है। मुझे बपतिस्मा लेने में क्या बाधा है?" फिर पद 37 में, "फिलिप्पुस ने कहा, 'यदि तू अपने सम्पूर्ण मन से विश्वास करे तो कर सकता है।' और उसने उत्तर दिया और कहा, 'मुझे विश्वास है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।'" यह अच्छा अंगीकार है।

लेकिन और भी है। हम न केवल स्वीकार करते हैं कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, हम उसे अपना प्रभु भी मानते हैं। "... यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।" रोमियों 10:9. हम उसे अपने नेता, मालिक, शासक, प्रमुख, मालिक के रूप में नाम देते हैं, जिसका हमारे जीवन पर पूरा अधिकार है। किसी दिन हर कोई यह अंगीकार करेगा - "...कि जो स्वर्ग में हैं, और जो पृथ्वी पर हैं, और जो पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें, और हर एक जीभ अंगीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु है, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए।" (फिलिप्पियों 2:10-11) लेकिन कुछ के लिए बहुत देर हो चुकी होगी।

क्या आप दूसरों के सामने स्वीकार करने के लिए तैयार हैं कि आप मानते हैं कि यीशु जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है और वह अब आपके जीवन का स्वामी और स्वामी है?

मुझे डूब जाना चाहिए

अधिनियमों 2:38- "पश्चाताप करो, और तुम में से हर एक को पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेने दो; और तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" हमें अपने सभी पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए बपतिस्मा लेना है, डुबोना है।

अधिनियमों 22:16- "और अब तुम क्यों इंतज़ार कर रहे हो? उठ और बपतिस्मा ले, और यहोवा से प्रार्थना करके अपने पापों को धो डाल।"

> **टिप्पणी**: यह घोषित करने के बाद कि यीशु मानव रूप में भगवान थे और भगवान को क्षमा करने के लिए बुलाते हुए, पानी में विसर्जन, बपतिस्मा के कार्य के माध्यम से, भगवान मसीह के खून से पापों को धोते हैं - पानी नहीं। भगवान का नाम लेने का अर्थ है उन्हें कार्य करने के लिए आमंत्रित करना। प्रभु का नाम पुकारना, उनसे क्षमा करने की याचना करना, हमारे पापों को धोना और हमें बचाना!

1 पतरस 3:21- "उसके अनुसार (सन्दूक में पानी द्वारा बचाई गई आठ आत्माएँ), बपतिस्मा अब आपको बचाता है - मांस से गंदगी को हटाने के लिए नहीं, बल्कि यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से एक अच्छे विवेक के लिए भगवान से अपील करता है।" पतरस के अनुसार, बपतिस्मा भौतिक शरीर से गंदगी की बाहरी सफाई नहीं है। बल्कि, वह बपतिस्मा जो हमें बचाता है, एक अच्छे विवेक के लिए परमेश्वर से एक 'अपील' (याचिका) है। बपतिस्मा एक प्रार्थना है, एक अपील है, दोषी आत्मा की आंतरिक सफाई के लिए ईश्वर से विनती है। इसलिए, मसीह में बपतिस्मा बाइबल आधारित पापियों की सच्ची प्रार्थना है।

हमें हमारे पापों से कौन बचाता है? यीशु का लहू! यीशु का लहू हमें कब बचाता है? जब हम परमेश्वर से बपतिस्मा के द्वारा हमें शुद्ध करने का आह्वान करते हैं! तो बचत शक्ति कहाँ है? यह मसीह के प्रायश्चित लहू में है। (यीशु मसीह का पुनरुत्थान वह घटना है जिसने क्रूस पर उनकी मृत्यु के मूल्य को मान्य किया।) विश्वास - बपतिस्मा हमें मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान से जोड़ता है।

"उसकी मृत्यु में" बपतिस्मा लेना और "उसके पुनरूत्थान में उसके साथ एक होना" (रोमियों 6:3-5) बपतिस्मा में हमारे पास उद्धार कैसे आता है।

उद्धार, पापों की क्षमा, जो मसीह में परमेश्वर के साथ एक होने, मेल मिलाप करने से आती है, तब दी जाती है जब हमारे भरोसे वाले हृदय एक अच्छे विवेक के लिए परमेश्वर से अपील करते हैं। हम ऐसा तब करते हैं जब हम बपतिस्मा लेते हैं, डूब जाते हैं। बपतिस्मा

क्रूस पर मसीह की मृत्यु, प्रायश्चित बलिदान के आधार पर हमें बचाने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने वाला विश्वास है। क्या आपको बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है?

मुझे मरते दम तक वफादार रहना है
कुलुस्सियों 1:21-23- "और तू जो पहिले अलग हो गए थे, और दुष्ट कामों के द्वारा तेरी बुद्धि में बैरी थे, तौभी अब उस ने मृत्यु के द्वारा अपनी देह में मेल किया है, कि तुझे अपके साम्हने पवित्र, और निर्दोष, और नामधराई से ऊपर उपस्थित करे; यदि तुम विश्वास में स्थिर और दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो। ...."
प्रकाशितवाक्य 2:10- "मरने तक विश्वासयोग्य रहो, और मैं तुम्हें जीवन का मुकुट दूंगा।"

यह आपके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा की संक्षिप्त रूपरेखा मात्र है। जो लोग मसीह के मार्ग में प्रवेश करते हैं, वे अपना पूरा जीवन उनकी सिद्धता की खोज में व्यतीत करते हैं, अनंत जीवन की तैयारी करते हैं कि बचाए हुए लोग उनकी उपस्थिति में आनंद लेंगे। अब आपको फैसला करना है। हम में से हर एक अपना अनन्त भाग्य स्वयं चुनेगा। आपका फैसला कौन सा होगा?

मत्ती 7:13-14- "सँकरे द्वार से प्रवेश करो क्योंकि द्वार चौड़ा है और चौड़ा वह मार्ग है जो विनाश की ओर ले जाता है और बहुत से हैं जो इससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि संकरा द्वार कठिन है वह मार्ग है जो जीवन की ओर जाता है और कुछ ही हैं जो पाते हैं यह।"

दुनिया के लिए भगवान का निमंत्रण

मैट 11:28-30 -*"हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन से दीन हूं, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।"*

1 कुरिन्थियों 2:9-11-*"परन्तु जैसा लिखा है, 'आंख ने न देखा, न कान ने सुना, और न मनुष्य के मन में वे बातें आई हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।' परन्तु परमेश्वर ने उन्हें अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया है। क्योंकि आत्मा सब कुछ, हां, परमेश्वर की गूढ़ बातें जांचता है। क्योंकि मनुष्य मनुष्य की बातें उस मनुष्य की आत्मा के सिवाय और क्या जानता है जो उस में है? वैसे ही परमेश्वर की बातें परमेश्वर के आत्मा के सिवाय और कोई नहीं जानता।"*

मत्ती 28:18-20-*"यीशु ने आकर उनसे कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं। तथास्तु।"*

मार्क 1:14-15-यीशु गलील में आया, परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता, और कहता है, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है। मन फिराओ और सुसमाचार में विश्वास करो।"

मत्ती 6:33-34-*"परन्तु पहिले परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो, तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। इसलिए कल की चिंता मत करो, क्योंकि कल अपनी बातों की चिंता करेगा। दिन के लिए पर्याप्त अपनी परेशानी है।*

रोमियों 6:16-19-*"क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंपते हो, उसी के दास हो, जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञाकारिता के, जिसका अन्त धार्मिकता है? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यद्यपि तुम पाप के दास थे, तौभी तुम ने मन से उस उपदेश के अनुसार माना, जिस के तुम को सौंपे गए थे। और पाप से छूटकर तुम धर्म के दास हो गए। मैं तुम्हारी देह की दुर्बलता के कारण मानवीय शब्दों में बोलता हूं।"*

"क्योंकि जैसे तू ने अपने अंगों को अशुद्धता और अधर्म के दास करके और अधिक अधर्म की ओर ले जाने को ठहराया था, वैसे ही

अब अपने अंगों को पवित्रता के निमित्त धर्म के दास करके सौंप।"

प्रेरितों के काम 4:10-12-*"तुम सब और इस्राएल की सारी प्रजा जान ले कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य यहां तुम्हारे साम्हने भला चंगा खड़ा है। यह वही पत्थर है, जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, और अब कोने का मुख्य पत्थर हो गया है। और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।"*

निष्कर्ष

कल की कोई गारंटी नहीं है

त्रासदी यह है कि किसी को भी स्वर्ग को खोना नहीं चाहिए और नर्क को प्राप्त करना चाहिए। चुनाव हमारा है। हम अपने स्वयं के शाश्वत भाग्य का निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र हैं। अगर स्वर्ग तैयार लोगों के लिए तैयार जगह है, तो नर्क तैयार लोगों के लिए तैयार जगह है।

2 कुरिन्थियों 6:2-*"देखो, अभी वह उचित समय है; देखो, अभी उद्धार का दिन है।"*

यूहन्ना 15:10-*"यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।"*

बाद के जीवन के लिए जीने वाले "मसीह में" शैतान द्वारा लगातार उनके सामने रखे गए प्रलोभनों के बारे में जागरूक होना चाहिए क्योंकि भगवान के बच्चों के पुराने नियम और नए नियम दोनों में भगवान की अवज्ञा करने और दुनिया के तरीकों में वापस जाने के उदाहरण हैं।

जो "मसीह में नहीं" हैं उन्हें गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है:

मसीह में कैसे प्रवेश करें के बारे में बाइबल क्या कहती है?

सुनना-लगन से अध्ययन करें और पढ़ें कि मसीह ने क्या सिखाया क्योंकि वे जीवन के वचन हैं।

समझना

- सभी लोग, स्त्री और पुरुष, परमेश्वर के धर्मी तरीकों और आदेशों की अवहेलना करके पापी हैं
- किसी के क्षमा न किए गए पाप का परिणाम मेरी अनन्त मृत्यु के रूप में होगा
- परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन पाने के लिए व्यक्ति को क्षमा किया जाना चाहिए
- मेरे लिए मेरे सभी पापों की क्षमा पाने का एकमात्र तरीका मसीह है

विश्वास करना -यीशुथा और भगवान है

- वह सीनासरत के यीशु के रूप में मानव शरीर में पृथ्वी पर आया हूँ
- वहपुरुषों के बीच रहता था
- वहसूली पर चढ़ाए जाने पर, स्वेच्छा से मेरे पापों के लिए पूर्ण और एकमात्र बलिदान के रूप में अपना पापरहित भौतिक जीवन दे दिया
- वहदफनाया गया
- परमेश्वर ने तीसरे दिन उन्हें कब्र से जिलाया
- वहउनके पुनरुत्थान के बाद सैकड़ों लोगों को दिखाई दिए
- उसकापिता के साथ रहने के लिए स्वर्ग में वापस जाना उनके शिष्यों द्वारा देखा गया था

पश्चाताप -पाप और अवज्ञा से विश्वास और आज्ञाकारिता में परिवर्तन

अपराध स्वीकार करना -अपने विश्वास को स्वीकार करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

पाना -भगवान से अपने पापों को क्षमा करने का आह्वान करें

मरना -अपने पुराने, पापी, सांसारिक जीवन को मार डालो

दफन रहें -अपने मरे हुए पापी जीवन को बपतिस्मा की कब्र में उसकी मृत्यु में जल विसर्जन के द्वारा डालें, परमेश्वर को आपको एक नई शुद्ध सृष्टि के रूप में कब्र से उठाने की अनुमति दें।

पाना -पवित्र आत्मा एक जमा के रूप में गारंटी देता है कि क्या आना है

बनना -एक नए ईसाई के रूप में, भगवान ने आपको, उनके गोद लिए हुए बच्चे के रूप में, अन्य बच्चों को क्राइस्ट चर्च में जोड़ा।

रहना -मसीह और प्रेरितों की शिक्षाओं के प्रति दृढ़ता और आज्ञाकारिता से जीना जारी रखें "... मैं तुझसे विनती करता हूं कि तू उस बुलाहट के योग्य जीवन व्यतीत करे जो तुझे मिली है। पूरी तरह विनम्र और कोमल बनो; धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। शांति के बंधन के माध्यम से आत्मा की एकता को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करें।" (इफिसियों 4:1-3)

कार्रवाई करें - "सही समय" अभी है।
आज मोक्ष दिवस है!

प्रश्न

1. भगवान ने सभी पुरुषों को ए दिया है। ____ शरीर ख। ____ आत्मा सी। ____ आत्मा डी। ____ उपरोक्त सभी ई. ____ शरीर और आत्मा

2. मनुष्य केवल एक बार मरता है उसके बाद न्याय आता है। सही गलत ____

3. मनुष्य की आत्मा उसका विवेक (जागरूकता) है।
सही गलत ____

4. मनुष्य की आत्मा परमेश्वर द्वारा दी गई है और जब मनुष्य की शारीरिक मृत्यु होगी तो वह उसके पास वापस आ जाएगी। सही गलत ____

5. परमेश्वर ने इस्राएलियोंसे जो वाचा बान्धी यी, उस ने उनके पापोंको बैलोंऔर बकरोंके बलिदान के द्वारा क्षमा किया। सही गलत ____

6. परमेश्वर के दूत ने यूसुफ को स्वप्न में बताया, कि मेरी मंगेतर मरियम का एक पुत्र होगा जो पवित्र आत्मा से गर्भ में रहेगा और वह लोगों को उनके पापों से छुड़ाएगा।
सही गलत ____

7. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने गवाही दी कि यीशु परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत के पापों को उठा ले जाएगा। सही गलत ____

8. यीशु ने घोषित किया "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ।" सही गलत ____

9. जब यीशु की मृत्यु हुई तो उसकी आत्मा अधोलोक में चली गई, शारीरिक रूप से मृतकों की आत्माओं का निवास स्थान। सही गलत ____

10. जब मसीह का पुनरुत्थान हुआ, तो उसने नरक के उस ओर के स्वर्ग के द्वार खोल दिए, जिसमें सभी बंद थे। सही गलत ____

11. जब मसीह का स्वर्गारोहण हुआ, तो उसने अधोलोक के परादीस पक्ष में बंद धर्मी आत्माओं को स्वर्ग में अपने साथ रहने के लिए नेतृत्व किया? सही गलत ____

12. यीशु ने कहा कि गेट्स ऑफ हेड्स विश्वास करने वाले, विश्वास करने वाले और आज्ञाकारी लोगों, उनके चर्च के शरीर के खिलाफ प्रबल नहीं होगा। सही गलत ____

13. थिस्सलुनीक के ईसाईयों से बात करते हुए पॉल ने उन्हें बताया कि मसीह मर गया ताकि मसीह के आज्ञाकारी, चाहे उसके आने पर जीवित हों या मृत, उसके साथ एक साथ रहेंगे।
सही गलत ____

14. अपने पिता के साथ रहने के लिए मसीह का स्वर्गारोहण इनके द्वारा देखा गया: a. ____ यहूदियों के नेता ख। ____ उनके स्वर्गारोहण का कोई गवाह नहीं था। ____ उनके शिष्य

15. मसीह के लहू से धर्मी बनाए गए सभी लोगों की आत्माएं स्वर्ग में परमेश्वर के साथ हमेशा के लिए निवास करेंगी, जबकि अधर्मी, विद्रोही और दुष्टों की आत्माएं शैतान के लिए तैयार किए गए हमेशा के लिए नर्क में अपना निवास स्थान बनाएंगी। सही गलत ____

16. जो लोग परमेश्वर के मेल-मिलाप (मसीह का सुसमाचार) के संदेश को सुनते हैं, वे वर्तमान जीवन शैली (पश्चाताप) से बदल जाते हैं और बपतिस्मा (निमज्जित) हो जाते हैं, उन्हें उनमें निवास करने के लिए पवित्र आत्मा दिया जाता है। सही गलत ____

17. जब मसीह बादलों में लौटेगा (दूसरा आगमन) तो मसीह में रहने वाले उससे हवा में मिलेंगे। सही गलत ____

18. क्या क्षमा माँगने के लिए यह आवश्यक है कि किसी व्यक्ति को यह स्वीकार करना पड़े कि वह पापी है? सही गलत ____

19. शास्त्र के अनुसार सभी ने पाप किया है। सही गलत ____

20. लोग किसके द्वारा बचाए जाते हैं? ____ विश्वास और आज्ञाकारिता के द्वारा अनुग्रह। बी। ____ अनुग्रह सी। ____ एक अच्छा और नैतिक जीवन जीना।

21. उद्धार के कितने मार्ग हैं? एक। ____ अनेक बी. ____ एक सी. ____ शास्त्रों में नहीं बताया गया है

22. पश्चाताप है a. ____ अवांछित कार्य के लिए खेद व्यक्त करना b. ____ दिल, दिमाग और जीवनशैली में बदलाव

23. मसीह में बपतिस्मा क्षमा के लिए मनुष्य की परमेश्वर से याचना है ताकि परमेश्वर पाप के लिए सिद्ध बलिदान के रूप में दिए गए मसीह के लहू के द्वारा कार्य कर सके। सही गलत ____

24. कुलुस्सियों 1:22 में "आईएफ" का अर्थ है कि किसी के लिए विश्वासयोग्य नहीं रहना संभव है। सही गलत ____

25. हर कोई चाहे वह ईसाई हो या गैर-ईसाई: के लिए जी रहा है: ए। ____ या तो अनन्त जीवन या अनन्त मृत्यु
बी। ____ न तो सभी बचेंगे
सी। ____ न तो अनंत काल मौजूद है